हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जुलाई, 2004 वर्ष 3 अंक 5

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

ज़माना नाम है मेरा तो
मैं सब को दिखा दूंगा।
कि जो ताल़ीम से भागेंगे
नाम उनका मिटा दूंगा।
(हाली)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका **वार्षिक** चन्दा समाप्त हो चुका है।
कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

- समाज में जहेज़ की रस्म — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
- बुन्यादी इस्लामी अ़क़ाइद — मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 8
- किसी का माल उसकी रज़ामन्दी के बिना... — मुफ़्ती अब्दुर्रहीम लाजपूरी 9
- ह़म्द बारी तआ़ला — मौ०मु० सानी ह़सनी 10
- हवा हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के कब्ज़े में.. — अबू मर्गूब 11
- सत्यवादिता और निर्भीकता — डॉ० मु० इज्तिबा नदवी 12
- नअ़त — शौकत नियाज़ी 13
- शौहर के हुक़ूक़ — इदारा 14
- मुस्लिम शासकों की धार्मिक नीति — विश्वम्भरनाथ पाण्डेय 15
- हमें अपने अ़ज़ाइम से.... — हैदर अली नदवी 21
- ह़ज़रत ज़करिय्या (अ़) की कहानी — आसिफ अंजार नदवी 22
- सम्पादक के नाम डाक 24
- आपकी समस्याएं और उनका ह़ल — मुह़म्मद सरवर फ़ारूकी नदवी 25
- इबादत की ह़क़ीक़त — बिलाल हसनी 27
- ह़लफुल फुजूल — मु० अरशद नदवी 27
- ज्ञान प्राप्त का महत्व — मु० अह़सन 28
- वह विद्यार्थी था — मौ० सलीमुल्लाह ज़करिय्या 29
- फ़िक्रे नशेमन — डा० मसऊदुल हसन उसमानी 33
- बच्चों के लिए स्वस्थ माहौल — अनुवाद 35
- आम — इदारा 37
- हमारा सौर मण्डल — लतीफ अह़मद एम०ए० 38
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — हबीबुल्लाह आज़मी 40
- आ़लिम को मौलाना कहना शिर्क नहीं है — इदारा 40

❑❑❑

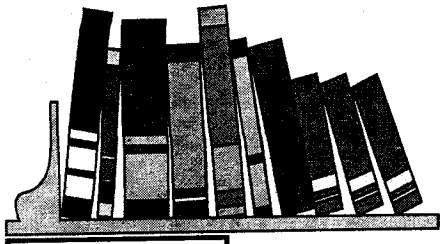

शिक्षा दीक्षा

(तअ़लीम व तर्बियत)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

शिक्षा दीक्षा (तअ़लीम व तर्बियत) ऐसा विषय है जिस का महत्व पढ़ा अनपढ़, स्त्री पुरुष, राजा, प्रजा, शासक, शासित, सब को स्वीकार (तस्लीम) है। अलबत्ता शिक्षा दीक्षा का अर्थ समझने में ज्ञानी तथा अज्ञानी में अंतर है। अज्ञानी शिक्षा (तअ़लीम) का अर्थ यह लेता है कि लिखना पढ़ना आ जाए जब कि एक ज्ञानी के निकट लिखने, पढ़ने के साथ लाभ, हानि तथा अच्छे बुरे का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

बच्चा बोलना तो घर में सीखता है और मां बाप की बोली बोलता है। पस चाहिए की बच्चे को उसी बोली का लिखना पढ़ना सिखाया जाए अर्थात मातृ भाषा सिखाई जाए। मातृ भाषा बिना बच्चों को कोई और भाषा सिखाना उन के मानसिक विकास (दिमाग़ी नश्वनमा) को प्रभावित करना है जो एक प्रकार का सामाजिक अपराध है परन्तु इससे तो लोगों ने आंखें मून्द ली हैं और आज धड़ल्ले से इंग्लिश मीडियम स्कूल इस सामाजिक अपराध को उपकार सिद्ध कर रहे हैं और जनसाधारण भारी मूल्य चुका कर यह अपराध ख़रीद रहे हैं। वास्तव में होता यह है कि बच्चे को जिस रास्ते चलाओ चलने लगता है। वह अपने सरपरस्तों की अंग्रेज़ी से मर्ज़बियत से प्रभावित होकर एवं पड़ोसी बच्चे जो हिन्दी मीडियम स्कूलों में पढ़ते हैं उन पर अपनी उच्चता सिद्ध करने के लिए रात दिन एक कर के पढ़ता है यहां तक कि सफलता प्राप्त करता है, लेकिन इस का हिसाब कोई नहीं लगाता कि यह सफलता दिमाग़ पर कितना बोझ डाल कर प्राप्त की गई है अगर यही मेहनत मातृभाषा पर होती तो बच्चा अत्यधिक उन्नति करता।

बड़े खेद की बात है कि हमारे उर्दू हिन्दी मीडियम स्कूलों में वह मेहनत नहीं होती जो अंग्रेज़ी स्कूलों में होती है। इस का कारण भी मर्ज़बियत ही है। अंग्रेज़ी स्कूल वाले चाहे उन की तन्ख़्वाहें कम हों उनका डिसिपलेन (अनुशासन) अच्छा होता है और चाहे वह अपना काम बच्चे के मां बाप और उसके टयूटर से पूरा करवाएं लेकिन उनके पढ़ाने का ढंग हिन्दी मीडियम वालों से अच्छा होता है। यही कारण है कि अंग्रेज़ी स्कूलों की ओर लोगों का झुकाव अधिक है। और यह हिन्दी उर्दू स्कूलों के लिए एक चैलेंज (चुनौती) है।

यह जुलाई का महीना है। सरकारी तथा बहुत से प्राइवेट स्कूलों में इसी महीने से पढ़ाई का साल आरंभ होता है। हमको चाहिए कि हम अपने पारम्परिक बिगाड़ों का सुधार करें। सरकारी स्कूलों के बिगाड़ का सुधार तो जभी सम्भव है जब टीचरों में ख़ुद से सुधार की भावना (जज़्बा) पैदा हो। वहां के बिगाड़ का केवल एक उदाहरण प्रस्तुत है। हमारे एक धर्मी सम्बन्धी दीहात के एक प्राइमरी स्कूल में टीचर थे। उनके सहायक ट्रेन्ड टीचर दो दो सप्ताह स्कूल न आते और जब आते तो सभी पिछली तिथियों में हस्ताक्षर कर देते टोकने पर बुरा मानते और लड़ने को तैयार हो जाते। एक समय दस दिन तक वह स्कूल न आए। उसी दौरान एक दिन इंसपिक्टर साहिब इन्सपेक्शन को आ गये। सहायक टीचर को ग़ैरहाज़िर पाकर आबजेक्शन किया। इन्होंने सारी बात बताकर उनके लड़ने आदि की शिकायत की । इन्सपेक्टर जी ने उनके विरुद्ध कार्यवाही कर के उनको निलंबित (मुअ़त्तल) कर दिया। मुक़द्दमा चला साल भर तक वह मुअ़त्तल रहे और मुक़द्दमा लड़ते रहे। आख़िर कार मुक़द्दमा जीते, मुअ़त्तली के ज़माने की तन्ख़्वाह के साथ बहाल हुए। शिकायत करने वाले हमारे अज़ीज़ मुंह लटका कर रह गये। क्या इसके बाद भी वहां बिगाड़ दूर हो सकने की उम्मीद की जा सकती है ख़ुदा करे कि शिक्षा विभाग किसी ऐसे मिनिस्टर (वज़ीर) को मिले जो उसके सुधार का बीड़ा उठाए तभी सुधार

सम्भव है।

प्राइवेट स्कूल वाले तवज्जुह करें तो वहां वक्त की पाबन्दी और शिक्षण प्रणाली में सुधार आ सकता है। परन्तु उर्दू, हिन्दी, मीडियम स्कूलो में भी बड़ी कोताहियां हैं।

वैसे किसी एक के लिख देने से बिगाड़ में सुधार सम्भव नहीं इस के लिए एक अभियान चलाने की जरूरत है। इस लेख में तो हम ५ , ६ साल तक के बच्चों की शिक्षा के विषय में कुछ स्वीकारात्मक (मुस्बत) बातें लिखेंगे, हो सकता है किसी योग्य के मन में आए और वह इस ओर ध्यान देकर यह या इससे अच्छे नियम आविष्कार करके प्रचलित कर दे।

हमारे बचपन में ८ वर्ष की आयु के पश्चात् ही शिक्षा आरंभ कराई जाती थी लेकिन अब तो तीन वर्ष की अवधि ही से शिक्षा आरंभ हो जाती है। यह बात जहां एक ओर प्रशन्सनीय है तो दूसरी ओर खेद की भी है इस लिए कि यह शिक्षा मातृ भाषा में नहीं अंग्रेज़ी भाषा में दी जाती है। उर्दू हिन्दी वालों को शर्म आना चाहिए और उन्हें चाहिए कि किन्डर गार्टिन और मान्टेसरी स्कूलों के स्थान पर बाल बाटिकाएं और रौज़तुल अत्फ़ाल खोलें और चाहें तो नरसरी और किन्डर गार्टिन ही नाम रखें परनतु पढ़ायें उनमें मातृ भाषा। जब बच्चा मां बाप से भली भांति बोलने लगे तो अब उसे रौज़तुल अत्फ़ाल या बाल बाटिका में दाख़िल करें। लेकिन जब तक बच्चा मातृ भाषा भली भांति लिखना पढ़ना न सीख जाए अंग्रेज़ी न पढ़ाएं।

छोटे बच्चों के अध्यापक (उस्ताद) को चाहिए कि ऐडमीशन के बाद दो तीन रोज़ तक बच्चों से सिर्फ़ बातें करके उनको मानूस भी करें और उनकी योग्यताओं (सलाहियतों) का अनुमान भी लगायें। फिर नवीन विधि से पढ़ाने के लिये लिखी गई पुस्तकों द्वारा मातृ भाषा पढ़ाना आरंभ करें। चाहिए कि उस्ताद ने नवीन विधि से पढ़ाने की ट्रेनिंग ली हो। यदि ऐसा न हो तो किसी ट्रेन्ड टीचर से सहायता लें और उसके संकेतों तथा परामर्शों पर चलते हुए बच्चों को लाभ पहुंचाएं। रौज़तुल अत्फ़ाल अर्थात बाल बाटिका कक्षा में अक्षरों और शब्दों की पहचान, उन का लिखना, अंकों की पहचान उनका लिखना, गिन्ती गिनना बस यही विभिन्न विधियों से पढ़ाया जाना चाहिए। अपने इर्द गिर्द की चीज़ों की पहचान और उनके नाम चित्रों तथा वास्तविक वस्तुओ द्वारा रोचक विधियों से अवगत कराया जाना चाहिए।

पांच वर्ष की आयु के छोटे बच्चों को स्कूलों में रोज़ाना ४ घंटों से अधिक मशग़ूल (व्यस्त) न रखना चाहिए। यह मशग़ूलियत भी रोचक होना चाहिए। बच्चों को नियमित रूप से दिलचस्प खेल खिलाना भी आवश्यक है। दूसरों से अच्छे ढंग से मिलना, उनका आदर करना, साथियों से प्रेम भाव रखना, उठना बैठना आदि नियम पूर्वक सिखाना चाहिए। घर का काम इस प्रकार का देना चाहिए कि बच्चा ख़ुद कर सके, जैसे पढ़ा हुआ दुहराना, लिखा हुआ फिर लिखना आदि। घर के काम के नाम से एक सप्ताह तक घर का काम स्कूल ही में करवाना चाहिए, फिर कहना चाहिए कि इसी प्रकार यह काम घर से कर लाना। इस्लाम का कलमा और अल्हम्दु ज़बानी याद कराना चाहिए।

पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों को पढ़ाने के लिए औरतें ज़ियादा ठीक रहती हैं। चाहिए कि स्कूल वाले महीने में एक बार मदर मीटिंग बुलाएं और माओं को जहां बच्चे के प्रोग्रेस के बारे में बताएं वहीं यह भी बताए कि बच्चे को रोज़ाना घर का काम दिया जाता है लिहाज़ा आप ख़ुद या आप की ओर से कोई और किसी मुनासिब वक़्त में कम से कम एक घंटा बैठ कर बच्चे से काम लें वह सब कुछ ख़ुद कर लेगा, बस उसे बिठालना और उससे काम का मुतालबा करना है।

माओं को यह बताना चाहिए कि हम ने बच्चों को रहन सहन के विषय में यह, यह सिखाया है आप इस बात की देख भाल रखें कि बच्चा सीखी हुई बातों का पालन करे। कपड़ों तथा शरीर की सफ़ाई का भरपूर ख़याल रखना चाहिए और बच्चे में उचित रख रखाव का जज़्बा पैदा करना चाहिए। घर पर भी मुनासिब वक़्तों में बच्चे को वरज़िशी खेलों में मशग़ूल करना चाहिए।

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

इन्साफ़ (न्याय)

अल्लाह इन्साफ़ और लोगों के साथ भलाई करने का हुक्म देता है।(१६:९०)

पहली बात यह है कि इन्साफ़ करना चाहिए।

इन्साफ़ का मतलब यह है कि हम जो बात कहें या जो काम करें उसमें सच्चाई का पल्ला भारी होना चाहिए। दोस्त हो या दुशमन, मित्र हो या शत्रु बड़ा हो या छोटा, लाभ की बात हो या हानि की, अपनी बात हो या दूसरे की किसी हाल में भी हक़ व इन्साफ़, सत्य तथा न्याय हाथ से न जाने देना चाहिए। हम वही कहें और वही करें जो सच्चाई की कसौटी पर पूरा उतरे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि इन्साफ़ करने वाला इमाम जन्नती है।

एक मरतबा एक ख़ान्दानी औरत पर चोरी का जुर्म साबित हुआ। हुज़ूर (स०) ने हाथ काटने का हुक्म दिया। बाज़ लोगों ने सिफ़ारिश करना चाही तो आप गुस्सा होकर बोले कि ख़ुदा की क़सम अगर मेरी बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काट डालता।

मालूम हुआ कि इन्साफ़ में न किसी की परवाह करना चाहिए न किसी के लिहाज़ में इन्साफ़ से हटना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि भलाई करना चाहिए।

हर नेकी के काम को भलाई कहते हैं, इन्साफ़ में किसी के नफ़ा व नुक़सान की परवाह नहीं की जाती है। हर एक को वाजिबी हक़ दिया जाता है। लेकिन एहसान में बिना हक़ के दिया जाता है या हक़ से ज़ियादा दिया जाता है।

एहसान (भलाई) के बहुत तरीक़े हैं जैसे किसी की माली मदद करना। मुसीबत से नजात दिलाना। क़ुसूर मुआफ़ करना। गुस्सा पी जाना। क़र्ज़ मुआफ करना। इसी तरह के सब वह सहीह काम जिन से तुम दूसरों को ख़ुश कर सको और आराम पहुंचा सको वह एहसान है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने हर चीज़ पर एहसान करना ज़रूरी किया है तो अगर तुम्हें किसी की (शरई हुक्म में) जान भी मारना पड़े तो इस काम को भी अच्छाई के साथ करो। किसी जानवर को ज़ब्ह करना चाहो तो गुट्ठल छुरी से मत ज़ब्ह करो। उसके साथ यह भलाई करो कि छुरी को खूब तेज़ कर लिया करो और अपने ज़बीहे को आराम दो।

कोई तुम्हारे साथ भलाई करे तो तुम भी उसके साथ भलाई करो। क़ुर्आन में है कि "भलाई का बदला सिर्फ़ भलाई है।" (५५:६०)

एक मर्तबा सहाबा किसी लड़ाई में प्यासे थे। पानी की तलाश में निकले, एक औरत मिली उसके पास पानी था उससे लेकर काम चलाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पानी का बदला भी दिलवा दिया फिर भी सहाबा ने इस इहसान को हमेशा याद रखा।

अहद (प्रतिज्ञा)

और अहद पूरा किया करो (कियामत में) अहद की पूछ होगी। (१७:३४)

वअदे का पूरा करना बहुत ज़रूरी है। रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने कहा वअदा कर के उसको पूरा न करना ईमान की कमी की निशानी है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि तुम जिस चीज को पूरा न कर सको उसका वअदा न करो एक आदमी अब्दुल्लाह बिन अबिलअम्सा ने हुजूर (सल्ल०) से कोई मुआमला किया और आप को बिठा कर चले गये कि आकर हिसाब साफ़ करता हूं। इत्तिफ़ाक़ से उनको ख़याल न रहा। तीन दिन के बाद आए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उसी जगह बैठे देखा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको देखकर फ़रमाया मैं तीन दिन से यहां तुम्हारे इन्तिज़ार में बैठा हूं। वअदा चाहे मुसलमान से हो या गैर मुस्लिम से अगर दीन के ख़िलाफ़ नहीं है तो उसको पूरा करना अनिवार्य है।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

पहचान और बे पहचान वाले को सलाम :

२६३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० से एक व्यक्ति ने सवाल किया कि इस्लाम में कौन सी बात बेहतर है? हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया खाना खिलाना और सलाम करना चाहे पहचान हो या न हो। (बुख़ारी, मुस्लिम)

सलाम के एहकाम –

२६४. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया सवार पैदल को सलाम करे और पैदल बैठने वाले को और थोड़े बहुत को सलाम करें। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अलग होने के बाद फिर सलाम:

२६५. हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया जो व्यक्ति अपने भाई से मिले तो उसको सलाम करे अगर दरख्त या दीवार या पत्थर हायल हो फिर उससे मिले तो उसको सलाम करे अबूदाऊद की एक रिवायत में है कि जब जुदा होने लगे तो फिर सलाम करे। (अबूदाऊद)

नर्मी के साथ मिलने की फ़ज़ीलत :

२६६. हज़रत अबूज़र (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया नेक काम में थोड़े काम को हकीर न समझना चाहिए कि अपने भाई से नर्मी से मिलो। (मुस्लिम)

मुसाफ़ह करने का सवाब :

२६७. हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जब दो मुसलमान आपस में मिलें और मुसाफ़ह करें तो उन दोनों के गुनाह अलग होने से पहले माफ़ कर दिये जायेंगे। (अबू दाऊद)

आने वाले से मुआनका –

२६८. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि ज़ैद बिन हारसा मदीना आये और रसूलुल्लाहि सल्ल० मेरे घर में तशरीफ फरमा थे ज़ैद (रज़ि०) दरवाज़े पर आये और दरवाज़ा खटखटाया आप सल्ल० उनकी ओर चले और कपड़ों को खींचते हुए तशरीफ़ ले जा रहे थे फिर आप सल्ल० ने उनको गले लगा लिया और बोसा दिया । (तिर्मिज़ी)

तीन बार इजाज़त मांगना :

२६६. हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया तीन बार इजाज़त लेनी चाहिए अगर इजाज़त न मिले तो लौट जाओ। (मुस्लिम, बुख़ारी)

किसी को उठा कर बैठने की मुमानियत :

३००. हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया कोई किसी को उठा कर उस जगह पर न बैठे और मजालिसों में वुसअ़त व गुन्जाइश पैदा करो। और हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के लिए जो जगह खाली कर देता था तो वह उस जगह पर नहीं बैठते थे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

३०१. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि जब आदमी किसी मजलिस से उठ कर जाए और फिर पलटे तो वह अपनी जगह का ज्यादा हक़दार है। (मुस्लिम)

जहां जगह पाये बैठ जाए :

३०२. हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० से रिवायत है कि हम लोग जब रसूलुल्लाहि सल्ल० के पास आते थे तो हम में का हर व्यक्ति जहां पहुंचता वहीं बैठ जाता। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

साथ बैठने वालों को अलग न करें :

३०३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया जाइज़ नहीं किसी व्यक्ति के लिए कि वह दो आदमियों को अलग–अलग कर दे मगर उनकी इजाजत से। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

एक को छोड़कर दो को राज़दाराना बातें न करनी चाहिए–

३०४. अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया जब तुम तीन आदमी हो तो एक को छोड़कर दो आदमी आपस में राज़दाराना गुफ्तगू न करें सिवाय यह कि तुम्हारे साथ और लोग भी शामिल हो जाएं, अकेला वह व्यक्ति होगा तो उसको नागवार होगी। (बुख़ारी, मुस्लिम)

छीक की दुआ और उसका जवाब :

३०५. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जब किसी के छींक आए तो अल्हम्दुलिल्लाहि कहे और उसका भाई

या साथी जवाब में यरहमुकल्लाह (तुम पर खुदा की रहमत हो) कहे फिर वह जवाब में "यहदिकुमुल्लाहि व युस्लिह बालकुम" (अल्लाह तुम्हें हिदायत से नवाज़े और तुम्हारी हालत दुरुस्त फरमाए) कहे । (बुख़ारी)

मरीज़ की अयादत से जन्नत की बहारों का हुसूल :

३०६. हज़रत सौबान (रज़ि०) ये रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की अयादत करता है तो जब तक वापस न आ जाए तो जन्नत की बहारों में होता है फ़रमाया : यानी उसके मेवों को चुनता रहता है।(मुस्लिम)

मरीज़ से क्या कहा जाय :

३०७. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० एक आराबी की अयादत को तशरीफ़ ले गये फरमाया "लाबासा तहूरुन इन्शाअल्लाह तआला।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अपने कामों को दाहिनी ओर से शुरू करो :

३०८. हज़रत आइशा रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० अपना हर काम दाहिनी ओर से शुरू करना पसंद फरमाते थे, तहारत हासिल करने, कंघी करने और जूता पहनने में भी।

(बुख़ारी, व मुस्लिम)

बिस्मिल्लाह कहना भूल गया हो तो :

३०९. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया अगर खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह कहना भूल गया तो बिस्मिल्लाहि अव्वलोह आखिराहू" पढ़ ले ।(अबू दाऊद, तिर्मिजी)

हुजूर सल्ल० ने किसी खाने में ऐब नहीं निकाला –

३१०. हज़रत अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने किसी खाने में कभी ऐब नहीं निकाला, पसंद आया तो खाया ना पसंद हुआ तो छोड़ दिया।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

अदब और तहज़ीब की तालीम–

३११. हजरत अम्र बिन अबी सलममा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के परवरिश में एक बच्चा था, मेरा हाथ प्लेट में चारों ओर जाता, आप सल्ल० ने मुझ से फ़रमाया लड़के, बिस्मिल्लाह करो और दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ।

(बुखारी, मुस्लिम)

तीन सांस में पानी पीने की हिदायत :

३१२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ऊंट की तरह एक ही सांस में न पिया करो, और तीन सांस में पियो और जब पियो तो "बिस्मिल्लाह" कह कर, और पी चुको तो "अल्हम्दु लिल्लाह" कहो। (तिर्मिज़ी)

खड़े–खड़े खाने पीने की मुमानियत :

३१३. हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने खड़े होकर पानी पीने से मना फ़रमाया, हज़रत क़तादा (ताबई) कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस से पूछा और खाना खड़े हो कर खाना कैसा है? फरमाया वह तो और भी बुरा और न पसंदीदा है। (मुस्लिम)

रेशम व दीबाज़ के इस्तिमाल की मुमानियत :

३१४. हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मना फ़रमाया रेशम और दीबाज़ के कपड़े पहनने और सोने और चांदी के बर्तन में पीने से और फ़रमाया यह उनके लिए (यानी उन लोगों के लिए जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और काफिर हैं) दुन्या में हैं और तुम्हारे लिए आख़िरत में।

(मुस्लिम बुखारी)

बेहतरीन कपड़े सफ़ेद कपड़े हैं :

३१५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : सफ़ेद कपड़े पहना करो, वह तुम्हारे लिए बेहतरीन लिबास है, और उसी (सफ़ेद कपड़ों) में अपने मुर्दों को दफनाओ भी। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

दूसरे रंगों का जवाज़ :

३१६. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) दर्मियाना क़द के थे मैंने आप सल्ल० को सुर्ख धारी वाले जोड़े में देखा आप सल्ल० इतने खूबसूरत मालूम हो रहे थे कि आप सल्ल० से ज्यादह खूबसूरत कोई चीज़ कभी मैंने देखी ही नहीं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

३१७. हज़रत रिफ़ाआ तमीमी (रजि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि सल्ल० को दो सब्ज़ कपड़े में मलबूस पाया। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

अनुवाद : मुहम्मद सरवर फारूक़ी नदवी

पाठकों से

हम आप के परामर्शों का स्वागत करते हैं। इम्कान भर उन पर अमल करने की कोशिश करेंगे। इल्म वालों से दरख्वास्त है कि वह हमारी कोशिशों को लोगों के लिए मुफीद समझते हैं तो दूसरों को इन मजामीन को पढ़ने पर उकसाइये और इसके खरीदार बढ़ाइये।

बुन्यादी इस्लामी अ़क़ाइद

मौ० मु० अबुलहसन अ़ली हसनी

सबसे पहले उन बातों को मालूम करने की ज़रूरत है जिन पर एक मुसलमान को विश्वास रखना आवश्यक है और उनके अनुकूल अ़मल (कर्म) करना ज़रूरी है। और जिन पर यक़ीन के बिना कोई मुसलमान कहलाने का हक़दार नहीं। वह अ़क़ीदे जो दुन्या के सभी मुसलमानों में पाये जाते हैं और हिन्दुस्तानी मुसलमान भी उन पर वैसा ही अ़क़ीदा रखते हैं जैसा मक्के या मदीने के मुसलमान मराकश या इन्डोनेशिया का मुसलमान, वह अ़क़ाइद यह हैं –

इस समस्त सृष्टि का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। सारी ख़ूबियां (गुण) सभी तारीफ़ की बातें, और सारे कमालात उसमें मौजूद हैं। वह हर प्रकार के दोष, कमियों और कमज़ोरियों से पाक हैं। समस्त सृष्टि और जो कुछ भी मौजूद है सब उसके ज्ञान में है। यह समस्त सृष्टि उसी के चाहने से है। वह ज़िन्दा है। वह सुनने वाला है, देखने वाला है। न कोई उस जैसा है न कोई उसका मुक़ाबिल और बराबरी वाला है। वह बेमिसाल (अनूपम) है। वह किसी की मदद का मुहताज नहीं। काइनात (सृष्टि) के चलाने और उसका इन्तिजाम (प्रबन्ध) करने में उसका कोई शरीक, साथी और मददगार नहीं। इ़बादत (उपासना) का वही मुस्तहिक़ (अधिकारी) है। वही रोगी को अच्छा करता है। मख़लूक़ (सृष्टि) को रोज़ी देता है और उनकी तकलीफ़ों को दूर करता है। अल्लाह के सिवा किसी और को मअ़बूद (पूज्य) बनाना, उसके आगे झुकना उसको सजदा करना, उससे दुआ़ करना, उस से ऐसी चीजें मांगना जो इन्सानी ताक़त से बाहर हैं और सिर्फ़ ख़ुदा की क़ुदरत से तअ़ल्लुक़ रखती है। जैसे औलाद मांगना, अच्छी बुरी तक़दीर आदि, यह शिर्क है और शिर्क सब से बड़ा गुनाह है जो बिना तौबा मुआ़फ़ नहीं होता।

क़ुर्आन शरीफ़ में बताया गया है कि उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है "हो जा, पस वह हो जाती है।" (यासीन : २२)

अल्लाह तआ़ला न किसी के जिस्म में उतरता है न किसी का रूप धारण (इख़्तियार) करता है। न उसका कोई अवतार होता है। वह किसी जगह या सम्त में महदूद (सीमित) नहीं है। जो वह चाहता है वही होता है। जो नहीं चाहता नहीं होता। वह ग़नी व बेनियाज़ है किसी चीज़ का भी मुहताज नहीं, उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता। उससे पूछा नहीं जा सकता है कि वह क्या कर रहा है। हिकमत उस की सिफ़त है। उसका हर काम हकीमाना है। और अच्छाई लिए हुए है। उसके अ़लावा कोई हक़ीक़ी हाकिम नहीं। तक़दीर अच्छी हो या बुरी अल्लाह की तरफ़ से है। वह आगे होने वाली बातों को उनके होने से पहले जानता और उनको वजूद (अस्तित्व) अ़ता करता है।

उसकी सृष्टि में बुलन्द मरतबा और मुक़र्रब (सम्मानित) फ़िरिश्ते हैं। शयातीन भी उसकी मख़लूक़ (सृष्टि) हैं, जो आदमियों के लिए बुराई का सबब (कारण) हैं, जिन्नात भी उस की मख़लूक़ हैं।

क़ुर्आन अल्लाह तआ़ला का कलाम है। उसके अल्फ़ाज़ व मआ़नी (शब्द तथा अर्थ) सब अल्लाह की तरफ़ से हैं। वह मुकम्मल है। कमी बेशी से महफ़ूज़ (सुरक्षित) है। जो शख़्स क़ुर्आन में कमी बेशी मानता है। वह मुसलमान नहीं।

मरने के बाद मुर्दों का अपने जिस्मों (शरीर) के साथ ज़िन्दा होना हक़्क़ (सत्य) है। हिसाब किताब का होना सत्य है। जज़ा व सज़ा (पुरस्कार तथा दण्ड) सत्य है जन्नत व दोज़ख़ सत्य हैं।

पैगम्बरों का अल्लाह की तरफ़ से दुन्या में आना बरहक़ (सत्य) है। और अंबिया–ए–किराम के द्वारा अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों को हुक्म करना और ताली़म देना सत्य है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के आख़िरी (अन्तिम) पैग़म्बर हैं। आप के बाद कोई नबी नहीं। आप की दअ़वत व रिसालत सारी दुन्या के लिय है। इस इम्तियाज़ व ख़ुसूसियत में, इस के अ़लावा इस जैसी विशेषताओं में, वह सब नबियों से अफ़ज़ल हैं। आप को रसूल माने बिना ईमान स्वीकार नहीं। अब और कोई दीन हक़ नहीं इस्लाम

(शेष पृष्ठ १३ पर)

किसी का माल उसकी दिली रज़ामन्दी के बिग़ैर लेना और बहनों को मीरास से महरूम (वंचित) करना

मुफ़्ती अब्दुर्रहीम लाजपूरी

मुसलमानों में एक मर्ज़ यह भी आ़म हो रहा है कि जहां मौक़ा मिला दूसरे का माल दबा लेते हैं सिर्फ़ दुनिया का मफ़ाद पेशे नज़र रहता है आख़िरत से बेइन्तिहा ग़फ़लत छाई हुई है। किसी दूसरे का माल उसकी दिली रज़ामन्दी के बग़ैर हलाल नहीं है ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद तक़ी उस्मानी तहरीर फ़रमाते हैं : हदीस में हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है " किसी मुसलमान का माल उसकी खुशदिली के बग़ैर हलाल नहीं।"(मजमउज़्ज़वाइद पृ. १७६, भाग–४)

हज्जतुलवदाअ (आख़िरी हज) के मौके पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मिना में ज़ो ख़ुतबा दिया उसमें यह भी इरशाद फ़रमाया कि "किसी शख़्स के लिए अपने भाई का कोई माल हलाल नहीं है सिवाए उस माल के जो उसने ख़ुशदिली से दिया हो (पृ. १७१, भाग – ४)

ह़ज़रत अबू हुमैद साअदी रज़िअल्लाहु अ़न्हु रवायत फ़रमाते हैं कि आं ह़ज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया :– " किसी मुसलमान के लिए हलाल नहीं है कि वह अपने भाई का कोई माल नाहक़ तौर पर ले, इस लिए कि अल्लाह तआ़ला ने मुसलमान का माल मुसलमान पर हराम किया है और इसको भी हराम क़रार दिया है कि कोई शख़्स अपने भाई की लाठी भी उसकी खुशदिली के बग़ैर ले।" पृ. १७१/४

किसी से कोई चीज़ लेने या उसको इस्तेमाल करने के लिए उसका खुशी से राज़ी होना ज़रूरी है, लिहाज़ा अगर किसी वक़्त हालात से यह मालूम हो जाए कि किसी शख़्स ने अपनी मिलकियत (स्वामित्व) इस्तेमाल करने की इजाज़त किसी दबाव के तहत या शरमाशरमी में दे दी है और वह दिल से उस पर राज़ी नहीं है तो ऐसी इजाज़त को इजाज़त नहीं समझा जाएगा, बल्कि उसका इस्तेमाल भी दूसरे शख़्स के लिए जायज़ नहीं होगा। (वसीयतुल इरफ़ान अक्टूबर १९९५)

इस विषय में यह बात भी ध्यान में रहे कि लड़कियों को मीरास (पैत्रिक संपत्ति) से महरूम (वंचित) करना और उनको मीरास से जो हिस्सा मिलता है वह लड़कों का आपस में तक़सीम (बटवारा) कर लेना, यह भी इसी हुक्म के अन्दर दाख़िल है और सख़्त हराम है और बहनों पर ज़ुल्म है, लड़कियों (बहनों) को जो शरअ़ी हक़ हो (और उनके अलावा जो भी शरअ़ी वारिस हों) उनका हक़ अदा करना अति आवश्यक और अनिवार्य है, मीरास की तक़सीम (बटवारा) कानूने इलाही (अल्लाहका क़ानून) है उसके अनुकूल अ़मल करना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत और अज्र व सवाब का बाइस (कारण) है और उसकी खिलाफ वर्ज़ी (विरुद्ध) पर दोज़ख की सख़्त वईद (कठोर चेतावनी) है, कुरआन मजीद में मीरास के अहकाम (आदेश) बयान फ़रमाने के बाद अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है अनुवादः ये अल्लाह की निश्चित की हुई सीमाएं हैं। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है। परन्तु जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे अल्लाह आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा और उसके लिए अपमान जनक यातना है। (सूरः निसा, आयत नं. १३,१४)

लिहाज़ा बहनों का और शरअई वारिसों का हक़ अदा कर देना चाहिए।

मौलाना मुफ़्ती आशिक़ इलाही बलन्दशहरी ने बड़ी अच्छी बात तहरीर फरमाई है।

"अल्लाह तआला शानुहू ने लड़कियों के हिस्से की अहमियत बयान फ़रमाते हुए "लिज़्ज़करि मिस्लू ह़ज़्ज़िल उनसययैन (लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर है) फरमाया अर्थात लड़कों का हिस्सा अलग से बताया ही नहीं बल्कि लड़कियों का हिस्सा बताते हुए लड़कों का हिस्सा बताया है।" (वसीयत और मीरास के अहकाम, पृ. ४३)

बाज़ लोग अपने किसी वारिस को "आक़" घोषित कर के उसको मीरास से महरूम (वंचित) कर देते हैं। यह भी जायज़ नहीं यदि कोई लड़का

नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) है तो उसके अमल का जवाब देह है अगर उसको मीरास से महरूम (वंचित) नहीं किया जा सकता।

हदीस में है :–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, निःसन्देह मर्द और औरत साठ (६०) साल तक अर्थात (पूर्णा आयु) अल्लाह तआला की इताअ़त (आज्ञापालन) करते हैं फिर मरने के समय वसीयत करने में किसी वारिस को ज़रर (हानि) पहुंचाने का कोई रास्ता निकालते हैं तो उनके लिए दोजख़ वाजिब (अनिवार्य) हो जाती है, फिर हज़रत अबू हुरैरा रजि० ने सूरः निसा की आयत न० १२, १३ की तिलावत फ़रमाई। (मिश्कात शरीफ पृ० २६५ बाबुल वसाया)

हमारे ज़माने की जो हालत है किसी शाएर (कवि) ने उसका ख़ूब नक़्शा खींचा है उसके कुछ अशआर (छन्द) याद हैं जो पेश (प्रस्तुत) किये जाते हैं :–

ख़बर हदीसों में जिस की आई
वही ज़माना अब आ रहा है
ज़मीं भी तेवर बदल रही है
फ़लक भी आंखें दिखा रहा है
पराए माल को अपना समझें
हराम को भी हलाल समझें
गुनाह करें और कमाल समझें
बताओ दुनिया में क्या रहा है
भाई का भाई बना है रहज़न
हक़ीक़ी बेटी है मां की दुश्मन
पिसर ने छोड़ा पिदर का दामन
बहन को भाई सता रहा है
हाथ बांधे खड़े हैं सफ पर
सब अपने अपने ख़्याल में हैं
इमामे मस्जिद से कोई पूछे
नमाज़ किस को पढ़ा रहा है

सारांश यह है कि दुन्या में हर हक़ वाले का हक़ अदा करके मआमला साफ कर लेना चाहिए, आख़िरत (परलोक) का मआमला बहुत ही संगीन है वहां हुकूक की अदाएगी नेकियों से कराई जाएगी नेकियां न रहेंगी तो हक वाले के गुनाह उसके ऊपर डाल दिये जाएंगे, हदीस में है :–

अनुवाद : हज़रत अबू हुरैरा रज़ि से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया, जिस पर उसके भाई का कोई हक, उसकी आबरू रेजी (बेइज्जती) या माल से सम्बन्धित हो तो उसे चाहिए कि आज ही उससे मआफी मांग ले इससे पहले कि क़ियामत (महाप्रलय) का दिन आए, वहां उसके पास न दीनार होंगे न दरहम, अगर उसके पास नेकियाँ होंगी तो नेकियां ले ली जाएंगी और अगर उसके पास नेकियां न होंगी तो हक़वाले के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे।

अनुवाद : हज़रत सईद बिन ज़ैद रजि० से रवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस शख़्स ने ज़ुल्म करके एक बालिश्त ज़मीन ले ली तो कियामत के दिन उस एक बालिश्त के बराबर सातों ज़मीन का हिस्सा उसके गले में तौक (हार) बनाक डाल दिया जाएगा।

किसी का माल दबालेने और मीरास न देने पर बाज़ वक़्त खानदान में फूट पड़ जाती है, और यह कत–ए–रहिमी अर्थात रिश्ता टूटने का सबब बन जाता है।

हिन्दी रूपान्तर : ग़ुफ़रान नदवी

हम्द बारी तआ़ला

मौ० मु०सानी हसनी

ऐ ख़ुदा साहिबे अ़ज़्ज़ो जाहो हशम
साहिबे अ़र्शो कुर्सीयो लौहो क़लम
बादशाहत तेरी कू बकू यम बयम
हम्द तेरी बया आज करते हैं हम
तेरे अल्लाह रहमान हैं पाक नाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

हर जगह हर नफ़स तूही तू तूही तू
है तेरी जुस्तुजू है तेरी गुफ़तगू
दोनों आ़लम को तूने दिया रंग व बू
तेरा जूदो करम सर बसर कू ब कू
ऐ ख़ुदा तेरी रहमत जहां में है आ़म
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू रहीमो मलिक तेरे दोनों जहां
सब पे तेरा करम सब पे तू मेहरबां
हैं तसर्रुफ में तेरे ज़मानो व मकां
तू अ़यां, तू निहां, तू यहां तू वहां
तू है कुद्दूस और नाम तेरा सलाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तेरे सारे मलक और जिन्नो बशर
महरो माहो नुजूमो फ़लक बहरो बर
ख़ारो गुल्हाए तर और सब जानवर
सालो माहो शबो रोज़ो शामो सहर
तू है सब का ख़ुदा सब हैं तेरे ग़ुलाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तेरे अहले अ़रब तेरे अहले अ़जम
तेरे फ़ाक़ा कशो अहले दामो दिरम
तेरे आगे सभी सर को करते हैं ख़म
फ़ज़्ल सब पर तेरा हर नफ़स हर क़दम
तू है मोमिन मुहैमिन भी तेरा है नाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

हवा हज़रत सुलैमान (अ0) के क़ब्ज़े में थी

अबू मग़ूब

बयानुल क़ुर्आन में सूर–ए–अंबिया की आयत ८१ के अन्तर्गत लिखा है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम जब मुल्क शाम से कहीं चले जाते और फिर आते तो यह आना जाना हवा द्वारा होता था जैसा कि दुर्रे मन्सूर में हज़रत इब्नि अ़ब्बास से बयान हुआ है। हाकिम ने उसको सहीह कहा है। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम अपने वज़ीरों मुसाहिबों के साथ कुर्सियों पर बैठ जाते फिर हवा को हुक्म देते वह सब को उठा कर थोड़ी देर में एक एक मास की दूरी तै करती।

ऐसे शैतान भी हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के वश में किये गये जो ज़ंजीरों में जकड़े रहते थे। यह स्पष्ट नहीं है कि वह जिन्न जो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के वश में दिये गये थे वह अपनी न दिखने वाली शक्ल में थे या किसी और शक्ल में थे परन्तु अनुमान होता है कि वह इन्सानी शकल में होंगे।

हवा का किसी के वश में होना और उसकी मर्ज़ी के अनुसार चलना जैसा कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लिए सिद्ध है यह प्रकृति के विरुद्ध (ख़र्क़ आदत) बात है इसी प्रकार जिन्नों और शैतानों का सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के वश में होना उन का मकान बनाना, समुद्र में ग़ोता लगाकर मोती आदि निकालना यह सब प्रकृति विरुद्ध (ख़र्क़ आदत) बातें हैं यह सब सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के मुअ़जिज़े हैं। किसी नबी से ख़र्क़ आदत बात ज़ाहिर हो तो मुअ़जिज़ा, वली जो नबी न हो उससे ख़र्क़ आदत बात ज़ाहिर हो तो उसे करामात और ग़ैर मुस्लिम चाहे जिन्न हो या इन्सान से प्रकृति विरुद्ध बात जाहिर हो तो उसे इस्तिदराज कहते हैं।

प्रकृति विरुद्ध (ख़र्क़ आदत) का मतलब यह है कि जैसे आग की प्रकृति जलाना है अगर वह न जलाए तो यह ख़र्क़ आदत बात कहलाएगी। इसी प्रकार यदि पत्थर बोलने लगे, लाठी सर्प बन जाए, गोह इन्सान की ज़बान बोले यह सब ख़र्क़ आदत (प्राकृति विरुद्ध) बातें हैं।

जिन्न आग की लपट से बनाए गये। उनका शरीर ललित तथा अदृश्य (लतीफ़ ग़ैर मरई) है। अतः उन के द्वारा मकान बनाना, पत्थर उठाना, तख़्त उठा लेना, ज़ंजीर में जकड़ा जाना यह सारी बातें उन की प्रकृति के विरुद्ध हैं अर्थात ख़र्क़ आदत हैं जो किसी नबी के मुअ़जिज़े, वली की करामत या शैतानी इस्तिदराज ही से ज़ाहिर हो सकती हैं। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के वश में दिये गये जिन्नों और शैतानों के सारे काम हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के मुअ़जिज़े के अंतर्गत हुए। यह बात समझ में नहीं आती कि जिन्न अपनी अस्ल शक्ल में रह कर माद्दी (भौतिक) काम अंजाम दे सकते हैं उन्होंने बरतन बनाने तथा मकान आदि बनाने के लिए ज़रूर ही कोई माद्दी शक्ल इख़्तियार की होगी। मानव का रूप धारा होगा। (वल्लाहु अअ़लमु) ज़ंजीरों से जकड़े जाने से भी यह इशारा मिलता है। ज़ंजीर से कोई माद्दी चीज़ ही बान्धी जा सकती है।

यह जो आ़मिल लोग दअ़्वा करते हैं कि हम जिन्नों से बड़े बड़े काम लेते हैं। कुछ कहते हैं गवाह का दिमाग़ पलट देते हैं, जज का दिमाग़ पलट देते हैं और मुक़द्दमे का फ़ैसला अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करवा लेते हैं यह सब निरा झूठ है। अगर सच है तो बुश, शेरोन और टोनी ब्लेयर का दिमाग़ पलटवा दें। यह आ़मिल जिन्न पर अ़क़ीदे को कमज़ोर कर रहे हैं। एक शख़्स जब आ़मिल को जांचता है और निरा फ्राड उसके सामने आता है तो वह जिन्नों के वजूद ही में शक करने लगता है। जिस का सबब यह झूठे आ़मिल हैं क़ुर्आन व हदीस से जिन्नों का वजूद साबित (सिद्ध) है। लेकिन जिन्नों का वह काम नहीं है जिस का दअ़्वा आ़मिल लोग करते हैं। अल्लाह तआ़ला हम को सहीह व नाफ़िअ़ (लाभ दायक) इल्म अता फ़रमाये।

नुबूव्वत ख़त्म हो चुकी इस लिये मुअ़जिज़े का ज़ुहर भी ख़त्म हुआ, करामत वली से जाहिर होती है, जिन्न उसकी खिदमत में आ सकता है। अल्लाह का वली किसी जिन्न को वश में करने का अ़मल नहीं करता। किताब व सुन्नत में कहीं ज़िक्र नहीं मिलता कि फुलां अ़मल से जिन्न ताबेअ़ हो जाता है लिहाज़ा आ़मिलों के दअ़्वे झूठे हैं। या फिर ग़ैर इस्लामी अअ़्माल से इस्तिदराज का ज़ुहूर है। जिसमें बड़ा गुनाह है। (वल्लाहु अअ़लम)

सत्यवादिता और निर्भीकता

डॉ० मु० इज्तिबा नदवी

इस्लाम ने सच बोलने को सर्व श्रेष्ठ और उच्च जिहाद ठहराया है, ताकि वास्तविकता और सच्चाई का सदैव बोल बाला रहे और असत्य, अत्याचार, बर्बरता, क्रूरता, झूठ और धोखा धड़ी दुनिया से समाप्त हो जाए। इस्लामी इतिहास में इसके अनगिनत उदाहरण मिलते हैं कि विद्वानों और साधु पुरूषों ने जान कीबाजी लगा कर अत्याचारी, बर्बर व क्रूर बादशाहों व शासको के दरबारों में सत्य बात कही। अपनी सत्यवादिता के कारण कितनों ने अपनी जानें गंवायीं और बहुत से लोगों ने अत्याचार, झूठ व धोखा धड़ी के उन्मूलन में योगदान दिया। इस प्रकार की भारत व पाकिस्तान उप महाद्वीप में घटने वाली कुछ मिसालें देखिये।

दिल्लीके बादशाह सुलतान कुतुबद्दीन मुबारक खिलजी का उसके दो भाइयों खिज़र खां और शादी खां से ताज व तख्त के बारे में मत भेद हुआ। नौबत जंग तक पहुंची। राज पाट पर अधिकार जमाने के लिए उसने दोनों भाइयों को क़त्ल करवा दिया। उसने अपने भाइयों के दोस्तों और साथियों सें भी कोई सम्बन्ध नहीं रखा, यहां तक कि दिल्ली के सब से बड़े बुजुर्ग सूफी हजरत ख्वाजा निजमुद्दीन औलिया रहम० से भी उसे इस करण संबंध ही नहीं तोड़ लिया बल्कि उनके प्रति अरूचि का प्रदर्शन किया, जिस का मात्र कारण यह था कि उसके भाई हज़रत निजामुद्दीन के प्रति गहरी आस्था रखते थे। उसने अपना सम्बन्ध दूसरे सिलसिले के सूफी से जोड़ कर उनके प्रति अपनी आस्था दिखाई। इसी भावना के अन्तर्गत उसने हजरत बहाउद्दीन ज़करिय्या मुलतानी रहम० के पोते हज़रत रूकनुद्दीन रहम० (७३५हि०/१३३४ई०) को मुलमान से दिल्ली आने की दावत दी।

हजरत निजामुद्दीन औलिया का सम्बन्ध चिश्तिया सिसिले से था जब कि हजरत मुलतानी उस समय सहरवर्दिया सिलसिले के प्रमुख थे। जब वे सुलतान से मिले तो उसने पूछा कि दिल्ली में सबसे पहले किस व्यक्ति ने आप का स्वागत किया? हजरत रूकनुद्दीन को हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया से सुलतान के प्रति शाह की कटुता का हाल मालूम था, लेकिन वे स्वयं हजरत निजाम के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे। उन्होंने जवाब दिया : उस व्यक्ति ने जो इस शहर का सबसे अच्छा आदमी है।

हिन्दुस्तान के राज्य मालवा व मान्डो के सुलतान महमूद खिलजी अपने कपड़े और खानों के लिए स्वयं कोई काम करते थे और खाने पहनने की वही चीजें इस्तेमाल करते थे जो वैध तरीके से वह स्वयं हासिल करते। सफर में लकड़ी के तख्तों पर बोयी गयी सब्जियां उनके साथ रहतीं। एक बार अहमदाबाद बीदर पर हमला करने गया जिसका शासक बहमनीखानदान का निजाम शाह था। इस हमले के बाद अहमदाबाद के एक बुजुर्ग मौलाना शमसुद्दीन किरमानी की सेवा में उपस्थित हुआ। सुलतान ने मुलाकात के दौरान कहा मेरे पास सब्जी खत्म हो गयी है, जिससे बड़ी परेशानी है, मैं लकड़ी के तख्तो पर जो सब्जी उगाता हूं, वह शाही रसोईघर के लिए पर्याप्त नहीं होती। यदि किसी व्यक्ति के पास हलाल पैसे से खरीदी हुई जमीन हो, तो मुझे बताइये, ताकि उसकी अच्छी कीमत देकर सब्जियां खरीद लूं। यह सुनकर मौलाना शमसुद्दीन किरमानी ने कहा : ऐ सुलतान ऐसी बात न करो जिसको सुनकर तुम्हारी खिल्ली उड़ाई जाए। मुसलमानों के मुल्क में आकर उनके घरों व माल को तबाह व बरबाद करना, उन पर हमला करना और आबादियों को वीरान करना, इसके बावजूद तरकारियों की खरीद में हलाल व हराम की बात करना पागल पन नहीं तो और क्या है ? यह बातें तो ईश भक्ति व इश्भय से दूर हैं। यह सुनकर सुलमान की आंखों में आंसू आ गए। उसने कहा कि आप सच कह रहे हैं, लेकिन इन बातों के बिना शासन नहीं होता।

सुलतान सिकन्दर लोधी एक बार बिहार के दौरे पर गया और बिहार शरीफ में ठहरा। वहां जुमा की नमाज जामा मस्जिद में जाकर पढ़ता था। एक जुमा में उसको मस्जिद आने में देर हो गयी। मस्जिद के इमाम बदी हक्कानी ने सुलतान के आने की परवाह किए बिना

जमाअत खड़ी कर दी। सुलतान को नमाज न मिली। उसके साथ मौलाना जमाली भी थे। उन्होंने नमाजियों से कहा : सुलतान के आने का इन्तजार करना चाहिए था। मियां बदी हक्कानी ने कहा कि हम लोगों को खुदा की नमाज़ अदा करनी थी वह कर ली। सुलतान सिकन्दर लोधी ने कहा : आपने अच्छा किया कि नमाज़ अदा कर ली। गलती तो मेरी ही है।

शेख अहमद मुजिद शीबानी नारनोल (गुजरात) में पैदा हुए और वहीं दफन हैं। उनके वालिद काजी मुजीदुद्दीन इमाम मुहम्मद शीबानी की सन्तान में से थे, जो इमाम अबू हनीफा रहम० के शिष्य थे। शेख अहमद मुजिद शीबानी छात्र ही थे, परन्तु बड़े बड़े विद्वानों से बहस करते। बड़े लोगों की मजलिसों में जाते ओर उनसे खुलकर बात चीत करते, लेकिन जब ख्वाजा हुसैन नागौरी से सम्पर्क हुआ तो तर्क वितर्क छोड़ दिया और बड़ों के यहां भी जाना बन्द कर दिया। अठारह साल की उम्र में अजमेर आए और सत्तर साल तक इबादत व रियाज़त में जीवन गुजारा। अमीरों और फ़क़ीरो दोनों को बराबर समझते और किसी की हिमायत न करते। अपनी कम आयु के जमाने में अपने रिश्तेदारों के साथ आर्थिक मदद के लिए मांडो गए। वहां शैख महमूद देहलवी शैखुल इस्लाम के पद पर आसीन थे। एक नमाज़ बाजमाअत में शैखुल इस्लाम शरीक हुए तो उन्होंने नमाज में इमाम से पहले अल्लाहु अकबर कह कर हाथ बांध लिए। नमाज खत्म हुई तो शैख अहमद मुजिद शीबानी आगे बढ़े और शैखुल इस्लाम से कहा कि आप की नमाज नहीं हुई, क्यों कि इमाम की तकबीर से पहले ही आप ने अल्लाहु अकबर कहकर हाथ बांध लिए थे।

यह बिना किसी भय के सच बोलने की भावना थी जिसने मुस्लिम आचरण और इस्लामी मूल्यों को जीवित रखा।

(पृष्ठ ७ का शेष)

ही एक दीन है जो हक है। इस्लाम के सिवा अब और कोई दीन अल्लाह के यहां स्वीकार नहीं न किसी और दीन से नजात (मोक्ष) मिल सकती है। शरीअ़त के आदेश बड़े से बड़े ईश भक्त (ख़ुदा रसीदा) को मुआ़फ़ नहीं हो सकते। ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बा़द इमाम खलीफ़–ए–बरह़क़ थे फिर ह़ज़रत उ़मर, फिर ह़ज़रत उ़समान फिर ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम । सह़ाब–ए–किराम मुसलमानों के दीनी क़ाइद (नेता) और रहनुमा (धार्मिक पथ प्रदर्शक) हैं। उनको बुरा कहना ह़राम (अवैध) है। उनकी इ़ज़्ज़त व तअ़ज़ीम (मान, सम्मान) वाजिब (अनिवार्य) है।

Anees Ahmad 0522-2242385(S) 2241117(R)

Famous Foot Wear

Wholeseller and Reteiler, Shoes, Chappal Sandle, Sleeper, Bally etc.

301/11, Saray Bans Akbari Gate, Luknow

नअ़त

शौकत नियाज़ी

अ़ब्दुल्लाह के राजदुलारे,
आमिनः की आंखों के तारे,
अह़मद प्यारे नबी हमारे,
हैं मानव में सबसे उत्तम,
सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

सीधा मार्ग दिखाया हमको,
ईश्वर–भक्त बनाया हमको,
सत् का पाठ पढ़ाया हमको,
और सिखाया निग्रह संयम,
सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

ईश्वर का सन्देश सुनाया,
उस पर करके अ़मल दिखाया,
चरवाहों को सभ्य बनाया,
नबी हमारे गुरू हैं अनुपम,
सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

कष्ट सहे पर काम न छोड़ा,
जीवनधारा का रुख़ मोड़ा,
गर्व वंश, बरन का तोड़ा,
दया, प्रेम, धीरज के उद्गम,
सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

रब ने अपने पास बुलाया,
साक्षात मिअ़राज कराया,
स्वर्ग–नरक का दृश्य दिखाया,
सत्य–ज्ञान ले आए प्रीतम,
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

बेशक अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते नबी पर दुरुद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दूरुद भेजो और खूब सलाम भेजो। (पवित्र क़ुर्आन)

शौहर के हुकूक़

अल्लाह तआ़ला ने शौहर (पति) का बड़ा अधिकार बताया है और उसको बड़ा सम्मान दिया है। शौहर को राज़ी और खुश रखना बड़ा उपकार है और उसको नाराज़ करना बड़ा पाप है। अल्लाह के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो औ़रत पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ती रहे और रमज़ान के महीने के रोज़े रखे और अपनी आब्रू बचाए रखे अर्थात सतवंती रहे तथा अपने शौहर की सेवा और उसका आज्ञा पालन करती रहे तो उसको इख़्तियार (अधिकार) है कि जन्नत के आठों दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए (मिश्कात पृ २८५)। एक और ह़दीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस औ़रत की मौत इस ह़ालत में हो कि उससे उसका शौहर राज़ी हो तो वह जन्नती है। (तिर्मिजी) एक और ह़दीस में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर मैं ख़ुदा के सिवा किसी और को सजदा करने के लिए कहता तो औ़रत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सजदा किया करे। (तिर्मिजी) परन्तु ग़ैरुल्लाह का सजदा इस उम्मत में ह़राम है इसलिए अल्लाह के अतिरिक्त किसी को सजदा करने की अनुमति नहीं दी गई। फ़रमाया अगर मर्द अपनी औ़रत को हुक्म दे कि इस पहाड़ को दूसरे पहाड़ पर ले जाओ और दूसरे पहाड़ को तीसरे पहाड़ पर ले जाओ तो उस को यही करना चाहिए। अर्थात औ़रत अपने शौहर के आदेश (हुक्म) का इनकार न करे। अलबत्ता गुनाह के काम में किसी की इताअ़त (आज्ञा पालन) नहीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब कोई मर्द अपनी बीवी को अपने काम के लिए बुलाये तो वह ज़ुरूर चली आवे। फ़रमाया जब कोई मर्द अपनी औ़रत को बुलाता है और वह नहीं आती है और मर्द गुस्से में सो जाता है तो फ़िरिश्ते सारी रात उस औ़रत पर लअ़नत (धिक्कार) करते रहते हैं। फ़रमाया कि दुन्या में जब कोई औ़रत अपने मर्द को सताती है तो जन्नत में जो ह़ूर उसके मर्द को मिलने वाली है वह इस औ़रत को बद दुआ़ (शाप) देती है और कहती है कि इस को मत सता यह तो तेरे पास मेहमान है यह तो मेरे पास आ जाएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन तरह़ के ऐसे लोग हैं जिन की न नमाज़ क़बूल होगी न कोई और नेक काम क़बूल होगा। एक तो वह लौन्डी ग़ुलाम जो अपने मालिक के पास से भाग जाए। (ज्ञात रहे कि अब लौन्डी ग़ुलाम दुन्या में नहीं रहे)दूसरे वह औ़रत जिस का शौहर उससे नाखुश हो। तीसरे वह जो नशे में मस्त हो। (मिश्कात) किसी ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सब से अच्छी औ़रत कौन है ? फ़रमाया कि वह औ़रत कि जिस का शौहर उसकी तरफ़ देखे तो वह उसको ख़ुश कर दे और जब वह कुछ कहे तो उस का कहना माने और उसके ख़िलाफ़ न करे।

शौहर का एक ह़क़ यह है कि जब औ़रत उस के साथ रहे तो उसकी इजाज़त के बिना नफ़्ल रोज़े न रखे न उसकी इजाज़त के बिना नफ़्ल नमाज़ पढ़े। एक ह़क़ मर्द का यह है कि औ़रत अपने मर्द के साथ मैली कुचैली न रहा करे बल्कि बनाव सिंगार के साथ रहा करे। एक ह़क़ यह है कि शौहर की इजाज़त के बिना घर से बाहर कहीं न जावे न रिश्ते दारों के घर न किसी ग़ैर के घर।

फ़ुक़हा ने लिखा है कि मर्द को इख़्तियार है कि जो घर उसने अपनी बीवी को रहने को दिया है उसमें अपनी बीवी के रिश्तेदारों को न आने दे, न मां को न बाप को न भाई को न और किसी रिश्तेदार को। लेकिन औ़रत अपने मां बाप को देखने के लिए हफ़्ते में एक बार जा सकती है। इसी तरह़ मां बाप भी हफ़्ते में एक बार अपनी बेटी से मिलने आ सकते हैं और मां बाप के अ़लावा दूसरे रिश्तेदारों के यहां औ़रत साल में सिर्फ एक बार जा सकती हैं और वह साल में सिर्फ एक बार मिलने आ सकते हैं लेकिन औ़रत का रिश्तेदार वही है जिससे उसका निकाह कभी भी न हो सकता हो। दूसरे लोग उस के लिए ग़ैर हैं।

मर्द को इख़्तियार है कि जब औ़रत के मह़रम रिश्तेदार उस से मिलने आएं तो वह उन को ज़ियादा देर न ठहरने दे। अगर औ़रत का बाप बीमार हो और कोई उसकी ख़बर लेने वाला नही है तो ज़रूरत के मुताबिक़ वहां रोज़ जाया करे चाहे शौहर रोके और चाहे बाप बेदीन हो।

मुस्लिम शासकों की धार्मिक नीति

लेखक : विश्वम्भर नाथ पाण्डेय

मुसलमानों की भारत पर विजय की गति बहुत धीमी थी। उन्हें भारत के दक्षिणी छोर तक पहुंचने में छः सदियां लग गईं। आक्रमणकारी यहां तीन चरणों में आये। पहला आक्रमण मुहम्मद बिन क़ासिम के नेतृत्व में सन् ७१२ ई० में हुआ। दूसरे चरण के आक्रमण दसवीं शताब्दी के अन्त और ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुए। यह आक्रमण सुबुक्तिगीन और महमूद ग़ज़नवी, जो तुर्की परिवार से थे, के नेतृत्व में किये गये। अन्तिम चरण जो दो सौ वर्ष बाद शुरू हुआ मुहम्मद ग़ौरी के आक्रमण का है जिसके बाद भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुई।

मुहम्मद बिन क़ासिम ने ब्रहमणों को सम्मान दिया और ऐसे आदेश जारी किये जिनसे उनकी प्रमुखता को पुष्टि होती है। जुल्म और हिंसा के विरुद्ध उनकी रक्षा की गई। उनमें से प्रत्येक को एक कार्यालय की जिम्मेदारी सौंपी गई। ईराक़ के गवर्नर और क़ासिम के चाचा और उसके निकट वयोवृद्ध हज्जाज ने उसे निम्नवत लिखा :–

"अब जब कि उन्हों ने (हिन्दुओं) आधिपत्य स्वीकार कर लिया है और ख़लीफ़ा को कर देना मान लिया है उनसे कुछ और अधिक की आशा नहीं करनी चाहिए। उन्हें हमारे संरक्षण में ले लिया गया है, और हम किसी प्रकार से उनके जान माल पर हाथ नहीं उठा सकते। उन्हें अपने देवताओं को पूजने की इजाज़त दी जाती है। किसी को अपने धर्म का पालन करने से न मना किया जाये न रोका जाये। वे अपने घरों में जिस तरह चाहें रहें।"

उसने (मुहम्मद बिन क़ासिम) ने सामन्तों को, प्रमुख वासियों को और ब्रहमणों को अपने मन्दिर बनाने, मुसलमानों के साथ व्यवसाय करने, निर्भय होकर जीने और अपनी स्थिति को बेहतर बनाने के निर्देश दिये। उसने उनसे दरिद्र ब्रहमणों के साथ उदार रहने, अपने पूर्वजों के रीति रिवाज को बरतने और ब्रहमणों को भोग और दान पूर्ववत् देने की ताकीद की।

यहां यह बात ध्यान देने की है कि भारत में मातहत क़ौमों के साथ व्यवहार में बदलाव आया था, मूर्तिपूजा की इजाज़त थी, मन्दिरों को बना रहने दिया गया, और उनकी पूजा पर कोई रोक नहीं लगाई गई। भारत में एक नया पृष्ठ पलटा गया। म्योर के कथनानुसार, "अर्थात् मूर्ति पूजकों के धर्म परिवर्तन की मंशा से अब कोई धर्म युद्ध (जेहाद) नहीं रहा था। इस उद्देश्य को छोड़ दिया गया था। अल्लाह के साथ साथ (साइड बाई साइड) मूर्तियों की पूजा की जा सकती थी, यदि केवल राजकर का सम्यक भुगतान किया जाता रहे।"

महमूद ग़ज़नवी के आक्रमण विजय की अपेक्षा लूट पाट के लिए अधिक थे। महमूद का मुख्य उद्देश्य पंजाब से फ़रात तक एक साम्राज्य की स्थापना का था और उसके जोखिम भरे प्रयासों का मुख्य धेय उसे अपने साम्राज्यवादी मकसदों, जिस के तहत उसकी इच्छानुसार ख़लीफ़ा को भी अपनी मातहती में लाना था, की पूर्ति के लिए साधन जुटाना था। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि उसके एक के बाद दूसरे उत्तरी भारत के बड़े बड़े धन दौलत के केन्द्रों पर आक्रमण क्यों किया, और देश को अपने अधीन बनाने तथा उस पर शासन करने की समस्या को कभी गम्भीरता से नहीं लिया यह सच्चाई कि भारतीय सैनिक टुकड़ियां उसके सैन्य बल का एक अंग थीं जो उसके साम्राज्य की सीमाओं के अन्दर लड़ती थीं, उस की नीति और व्यवहार पर जिज्ञासु प्रकाश डालती हैं। निःसन्देह गज़नी वासी हिन्दुओं की सैन विशेषताओं के प्रति ऊंचे विचार रखते थे, और हिन्दू देखने में उनकी सेवा करने में कोई अरुचि नहीं रखते थे। महमूद के लड़के मसूद ने सरवन्द राव को अपने भाई से लड़ाई में इस्तेमाल किया। और जैनसेन के बेटे तिलक को इंडिया राज्य के बाग़ी गवर्नर अहमद नियालितगीन का नाम दर्ज करने में इस्तेमाल किया। और उसने सलजूक तुर्कों से लड़ने के लिए हिन्दुओं की सैन्य टुकड़ी बनाई और उसके वारिस (उत्तराधिकारी) ने गज़नी के कोतवाल को एक हिन्दू सेनापति विजय राय को गज़नी वापस बुलाने के लिए नियुक्त किया, जहां से किन्हीं राजनीतिक मतभेदों के कारण यह भाग गया था।

डॉ० ईश्वरी प्रसाद अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री आफ मेडिवल इण्डिया' में कहते हैं " इतिहास में महमूद के स्थान को निर्धारितकरना कठिन नहीं है। वह अपने समय के मुसलमानों के लिए गाज़ी, आस्था का चैम्पियन था जिसने मूर्ति पूजाकों की धरती को नास्तिकता से मुक्त करने का प्रयास किया। हिन्दुओं के लिए वह आज तक अमानवीय अत्याचारी है, एक असली हुण जिसने उन के सर्वाधिक पवित्र मन्दिरों को बरबाद किया और उनकी धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया। परन्तु निष्पक्ष जिज्ञासु, जो अपने मस्तिष्क में उस काल की विचित्र परिस्थितियों को रखता है, अवश्य ही एक अलग राय कायम करेगा। उसके आंकलन में महमूद लोगों का एक महान नेता था, अपने ज्ञानलोक के अनुसार एक न्यायी और ईमानदार शासक, एक साहसी और प्रतिभाशाली सैनिक, इन्साफ़ बांटने वाला, विद्वानों का संरक्षक था, और दुनिया के महान सम्राटों में गिना जाने योग्य है।"

गज़नवियों के बाद ग़ौरी आये। उनका पहला शोषण ग़ज़नी शहरों को बरबाद करना था जिसे महमूद ने दुनिया के खूबसूरत तरीन शहरों में से एक शहर में बदल दिया था। अल्पतगीन (ALPTGIN) उस की विजय के पीछे आया और ग़ज़नी पर आंधी बनकर छा गया। शहर की बेहतरीन इमारतें, महान महमूद की अतिउत्तम यादगारें ढा दी गईं। और सात दिनों तक जिस के दौरान शहर गौरी सेनापति के कब्ज़े में रहा, रात में धुंए की कजरारी से हवायें उठती रहीं, और वे रातें, जलते हुए शहर की लपटों से ऐसी चमकती रहीं मानो दिन हो। सर्वाधिक हट और बदले की भावना के साथ लूट–मार और क़त्ल व ग़ारतगरी हुई, और मर्दों औरतों और बच्चों को या तो मार डाला गया या गुलाम बना लिया गया। महमूद और इब्राहीम को छोड़कर शेष सभी गज़नी के सुल्तानों की लाशों को उनकी कब्रों से खोदकर बाहर निकाला गया और निरादर के साथ जला दिया गया।

इसके बाद ग़ोरियों ने इन्डिया को निशाना बनाया। फारसी ऐतिहासिक वृतान्तकारों ने शहाबुद्दीन ग़ौरी की विजय को इस्लाम की विजय के रूप में बयान किया है। परन्तु जब वास्तविक तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है तो इतिहासकार भी जिन्हें किसी भी प्रकार से मुसलमानों का पक्षधर नहीं कहा जा सकता, शहाबुद्दीन के निम्नलिखित आंकलन से सहमत दिखाई पड़ते हैं :–

"यह नहीं कहा जा सकता है कि शहाबुद्दीन और उसके मुसलमानों की धार्मिक उमंग, जिसने उन्हें उसकाया, राजपूतों को उकसाने वाली धार्मिक उमंग से अधिक शक्तिशाली थी। यद्यपि मुसलमान इतिहासकार बयान करते हैं कि शहाबुद्दीन धार्मिक युद्ध कर रहा था, तथापि शहाबुद्दीन प्रदेश जीतने के लिए लड़ाई लड़ रहा था और धर्म फैलाने के लिए नहीं। वस्तुतः हम पाते हैं कि उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त करने में उसकी मंशा लोगों का धर्म परितर्वन कर उन्हें मुसलमान बनाना नहीं थी।"

शहाबुद्दीन के बाद कुतुबद्दीन और इल्तुतमिश के अभियानों का वर्णन ठीक इसी तरह किया जाता है। परन्तु जब हम बढ़ा चढ़ा कर कही गई बातों को कांट छांट कर देखते हैं तो पाते हैं कि :–

"कुतुबुद्दीन और इल्तुतमिश हठधर्मी मुस्लिम नहीं थे। और वे समझदार शासक थे जिन्होंने ब्रिटिश की तरह इन्साफ़ देखा और लोगों के धर्म में हस्तक्षेप न करने की समझ भी रखते थे।"

गौरी और उसके सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक की विजय एक प्रकार का विजय मार्च जैसा था जिसे राजपूत राजकुमारों की एक दूसरे को तबाह व बरबाद कर देने वाली लड़ाइयों ने आसान बना दिया, इन राजपूत राजकुमारों का उत्तरी भारत पर पूरा नियन्त्रण था। उसने पचीस वर्ष से कम के अन्तराल में पूरे उत्तरी भारत पर कब्जा कर उसे अधीन बना लिया। किन्तु मुस्लिम शासन की स्थापना हिन्दू राजाओं और जमींदारों की जगह मुसलमान प्रमुखों की प्रति स्थापना के साथ कुछ और अधिक मायनी रखता था। "कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया में सरवेल्सले हेग लिखते हैं कि:–

"अत्यधिक संवेगात्मक राग अलापने वाले मुस्लिम इतिहासकारों ने किसी उठते हुए को कुचल देने अथवा किसी गढ़ (किला) पर कब्जा करने, नगरों और गावों को जलाकर राख करने, पूरे जिले का तबाह व बरबाद करने के जो उल्लेख किये हैं यह बयान हम को भरमा कर इस विश्वास में डाल सकते हैं कि उत्तरी भारत पर शुरू की मुस्लिम विजय एक लम्बा धर्म युद्ध था जो मूर्तिपूजा को समूल समाप्त करने और इस्लाम के प्रसार व प्रचार के लिए छेड़ा गया था, क्या हमारे पास इस बात के प्रमाण नहीं हैं कि ऐसा नहीं हो सकता है। महमूद से लेकर आगे तक भारत में सभी मुस्लिम शासकों ने, जब उन्होंने ऐसा करना उचित समझा, हिन्दू शासकों और ज़मींदारों की राज्य–निष्ठा को

स्वीकार किया, और अपनी विरासत की जमींनी को सिकमी असामी के रूप में उनकी पुष्टि कर दी।"

और यह भी कि उन्होंने (मुस्लिम शासकों) इन पर (हिन्दू) न केवल साधन के समर्थन के लिए निर्भर किया बल्कि बड़ी हद तक अधीनस्थ सरकारी तन्त्र के लिए भी, क्यो कि निःसन्देह व्यवहार में समस्त छोटे पद जिनका सम्बन्ध जमीन की कीमत लगाने और लगान वसूल करने से था, औरजो पब्लिक तथा स्टेट के वित्त लेखा से सम्बन्धित थे, सामन्यतः हिन्दुओं द्वारा भरे गये, जैसा कि बाद की कई पीढ़ियों में वे थे।

"विद्रोह और खुले असन्तोष को क्रूरता और सख्ती से कुचल दिया गया, और निःसन्देह धर्म–परिवर्तन के अवसर आये, किन्तु गुनाह बगावत का था, धार्मिक गल्ती नहीं। ओर यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि एक मुस्लिम के अधीन हिन्दू काश्तकार की पोजीशन जमींदार हिन्दू के अधीन काश्तकार से खराब थी। निश्चय ही हिन्दुओं के लिए मुसलमानों के विरुद्ध भी इन्साफ हासिल करना सम्भव था।"

यद्यपि मध्यकालीन भारत में राष्ट्राध्यक्ष मुस्लिम था, राज्य इस्लामी नहीं था। राज्य में पवित्र कुरान के आदेशों, हदीस अथवा सुन्नी फ़िक़ा (धर्म शास्त्र) के चार स्कूलों द्वारा विवेचना किये गये क़ानूनों का पालन नहीं होता था। मध्यकालीन भारत को धार्मिक स्टेट (दीनी हुकूमत) कहना ग़लत है, क्योंकि वह मुस्लिम वेदान्तियों के निर्देशन में काम नही करती थी।

तेरहवीं शताब्दी से आगे इण्डिया के लगभग प्रत्येक मुस्लिम बादशाह ने शरीअत के अनुसार हुकूमत चलाने में अपनी मजबूरी जाहिर की और असम्भावना व्यक्त की। इल्तुतमिश बलबन, अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक इण्डिया के मुगलों से पहले के राजा था जिन्होंने इण्डिया में मुस्लिम क़ानून को लागू करने की उपयुक्तता पर प्रश्न चिन्ह लगाया।

इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी अपने फतावा–ए–फहन्दरी में कहते हैं।

"रसूल के अनुसरण में दीन है . ..... किन्तु इसके विपरीत राज सरकार खुसरो परवेज और ईरान के महान सम्राटों की नीतियों पर चलकर ही चलाई जा सकती है।"

वह स्वीकार करते हैं कि :

"पैगम्बर मुहम्मद की सुन्नत, उनके रहन–सहन और जीवनी तथा ईरानी बादशाहों के रीति–रिवाजों और उनके रहन–सहन और जीवनी के बीच पूर्ण विरोधाभास पाया जाता है।"

किन्तु वह बताते हैं कि शरीअ़त जो अल्लाह का आदेश है, का हुकूमत के कार्यों में केवल असाधारण समय में पालन हो सकता है। मुहम्मद (सल्ल०) शरीअ़त को लागू करने में सफल रहे, क्योंकि उन्हें सीधे अल्लाह से निर्देश मिलते थे, पहले चार खलीफाओं ने ऐसे ही किया क्योंकि वह रसूल के सहयोगी रह चुके थे। परन्तु उनके उत्तराधिकारियों को दो असंगत विकल्पों का सामना था, रसूल की सुन्नत और इरानी बादशाहों की नीति। किन्तु "नुबूवत धर्म की परिपूर्णता है और बादशाहत दुनियावी मायाजाल की परिपूर्णता। इन दो परिपूर्णताओं में विरोध है और एक दूसरे के विपरीत हैं और इनका मेल सम्भावना से परे हैं।

कुछ उलमा इल्तुतमिश के पास आये और प्रार्थना किया कि चूंकि हिन्दू अहले किताब नहीं हैं जिन्हें मुस्लिम संरक्षण में जिम्मी के रूप में लिया जा सके, इसलिए उन से इस्लाम स्वीकर करने को कहा जाना चाहिए, और इन्कार की सूरत में उन्हें क़त्ल कर दिया जाये। इल्तुतमिश ने अपने वजीर से उत्तर देने को कहा। और उसने जवाब दिया कि प्रार्थना पर अमल करना असम्भ्व है। जहां तक बलबन की बात है, इतिहासकार निजामुद्दीन कहते हैं, "वह सरकारी काम को धर्म पर प्राथमिका देता था।" बरनी लिखता है, "दण्ड के मामले में और शाही फरमान को लागू करने में वह बिना खुदा के डर के काम करता था, और जो कुछ भी सरकार के हित में वह समझता था उसे, चाहे वह शरीअ़त के अनुकूल हो या नहीं कार्यान्वित करता था। अलाउद्दीन की क़ाज़ी मुगीसुद्दीन के साथ बहस सर्व विदित है। उसका क़ाज़ी को अन्तिम उत्तर था "मैं जो कुछ सरकार के हित में समझता हूं, और जिसे समय की ज़रूरत समझता हूं, उसका मैं आदेश देता हूं। मैं नहीं जानता कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला का मेरे साथ क्या मामला होगा।"

प्राफेसर एम० हबीब कहते हैं, " यह सच है कि मुस्लिम राजा जिन में अधिक विदेशी मूल के थे, छः सात शताब्दियों तक इण्डिया के ताजदार रहे। परन्तु वे ऐसा इसीलिए कर सके क्यों कि उनकी ताजपोशी 'मुस्लिम शासन' की ताजपोशी नहीं थी। यदि इसके विपरीत होता तो वे एक पीढ़ी से आगे नहीं चल सकते थे।"

मुग़ल बादशाहों में बाबर, क्योंकि उसने थोड़े समय राज किया, और हुमायूं,

क्यों कि वह कठिनाइयों से घिरा रहा, दोनों को प्रशासनिक कार्यों पर ध्यान देने का कम अवसर मिला। अकबर ने एक स्टेट पालीसी का शुभारंभ किया, जो इस्लाम के आदेशों के अधीन नहीं थी। वह सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करता था और धर्म के नाम पर अपनी प्रजा में भेद–भाव न करना अपना फर्ज समझता था। उसने उच्च पदों पर गैर–मुस्लिमों को नियुक्त किया। उसने हिन्दू राजकुमारी से विवाह किया और उन्हें अपने धर्म पर कायम रहने और महल में हिन्दू संस्कारों को करने की इजाज़त दी। उनके बेटे मुगल सिंहासन के वारिस बने। उसने धार्मिक प्रश्नों, जिन पर मुजतहिदों के बीच अलग राय हो सकती थी, की ज़िम्मेदारी स्वयं ली और उल्मा के हस्तक्षेप को समाप्त कर दिया। बहुत से सामाजिक और दूसरे मामलों में उसने अपनी ग़ैर–मुस्लिम प्रजा की भावनाओं तथा परम्पराओं का आदर किया। इनमें से सब से महत्वपूर्ण जज़िया (एक प्रकार का कर) को समाप्त किया जाना था। अबुल फ़ज़ल कहता है, " बादशाहत अल्लाह का एक तोहफा है,और इसपर आरूढ़ होने के बाद यदि बादशाह सार्वभौमिक शान्ति (सहिष्णुता) का परिचय नहीं देता, और यदि वह मानवता की सभी परिस्थितियों का सम्मान नहीं करता, और धर्म के समस्त सम्प्रदायों को एक नज़र से नहीं देखता ..... और किसी के साथ मां का और किसी के साथ सौतेली मां का व्यवहार करता है तो वह उस उच्च पद के लिए फिट न होगा।" आगे वह कहते हैं "धर्म में विभिन्नता उसे अपनी पहरेदारी की डयूटी से न रोके, और मनुष्य के सभी वर्गों को उसका विश्वास प्राप्त हो ताकि ईश्वर की छत्र छाया उस को शान प्रदान करें", इस प्रकार इब्ने हसन के शब्दों में "इस्लामी कानून और हदीस दोनों सरकार की आचार संहिता नहीं बन सके।"

मुसलमानों ने हिन्दू विवाह की बहुत सी रस्मों को अपना लिया और उनके ऐसे कार्य करने लगे जो इस्लामी क़ानून के विपरीत थे, उदाहरण के लिए शादी तय करने के मामले में नातेदारी की अर्हता अपने में और अपने से बाहर को सीमानिर्धारण में जो जनजातियों और वर्गीकरण पर आधारित हैं; और शादी के इक़रारनामे से संलग्न संस्कार में। विरासत के कानून इण्डिया के अनेक भागों में हटा दिये गये और उनकी जगह रीति–रिवाज (उर्फ) ने लेली। विधवा विवाह और तलाक़ पर भौंह चढ़ाई जाने लगी थी जैसा कि हिन्दुओं में होता है।

अनेक हिन्दू और मुस्लिम त्यौहार निष्पक्ष शान व शौकत के साथ मनाये जाते थे। दशहरा के अवसर पर, जो राम की राक्षसों पर विजय की वर्षगांठ है, शाही घोड़ों और हाथियों सर्वांग कवच में सजाया जाता था और उनकी निरीक्षण के लिए परेड होती थी। हिन्दू सामंत और ब्राह्मण रक्षा बन्धन के दिन शहनशाह के हाथ में राखी बान्धते थे। दीवाली के दिन महल में जुआ होता था और शिवरात्री विधिवत मनाई जाती थी। मुस्लिम त्योहार ईद और शबेबरात की अनदेखी नहीं होती थी।

मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच शादियां बहुत कम होती थीं, परन्तु शाही परिवारों के बीच होने वाली शादियों को पूरी मान्यता मिलती थी मुग़ल सम्राट इस नीति के अग्रणी (पायनियर्स) नहीं थे। कश्मीर में हिन्दू–मुस्लिम शादियां लम्बे समय से होती आ रही थीं । जैनुल आब्दीन (१४२०–७०) ने जम्मू के राजा मानकदेव की दो लड़कियों से शादी की थी, एक बेटी का विवाह मुस्लिम गोरखा प्रमुख राजा जसरथ के साथ हुआ था।

दकन के बहमनी राजाओं ने हिन्दू परिवारों के साथ गठबन्धन किया था। ताजुद्दीनफीरोज ने (१३७६–१४२२) विजय नगर के देव राय और खीररिया के नरसिंह राव की लड़कियों के साथ शादी की। नवें बहमनी शासक अहमद शाहवली ने सोनखेद के राजा की बेटी के साथ विवाह किया। बीजापुर के सुल्तान यूसुफ़ आदिल शाह (मृत्यु १५१०ई०) एक ब्रहमण मुकुन्दराव की बहन को अपनी पत्नी बनाया, और वह रानी बनी। अमीर बारिद बिदर (मृत्यु १५३६) ने ऐसा ही किया।

अकबर, जहांगीर, फ़र्रूख़ सियर, सुलेमान शिकोह, सिपिहर शिकोह ने हिन्दू राजकुमारियों को अपनी पत्नी बनाया। कच्छ के हिन्दू शाही परिवारों ने मुसलमानों के साथ शादी विवाह किये।

दूसरी ओर एक हिन्दू मुस्लिम स्त्री को अपने महल के पवित्र स्थल में स्वीकार करने में जात–पात के अवरोधों के होते हुए बहुत पीछे था। फिर भी ऐसी मिसालें अज्ञात नहीं थीं। राजमी, लद्दाख और बालतिस्ता जहांगीर ने दो समुदायों के बीच आपस में शादी विवाह देखे। पेशवा बाजीराव की मस्तानी के साथ प्रेम गाथा सर्वविदित है। वह एक नाचने वाली लड़की थी जो पेशवा की शरीके हयात बनी और बाजी राव के अभियानों में साथ रही और उसके साथ रकाब से रकाब मिलाकर सवार रही ।

१७३४ में उसने पेशवा के एक

बेटे को जन्म दिया जिसका पालन पोषण एक मुसलमान के रूप में हुआ (ब्रहमणों द्वारा उसे हिन्दू स्वीकार न किये जाने पर) । वह १७६१ में पानी पत में मारा गया। उसकी जागीर उसके बेटे अली बहादुर को विरासत में मिली। १७८७ में महदजी सिंदिया को मुंह की खानी पड़ी, तो पेशवा के घराने के प्रतिनिधि के रूप में 'अली बहादुर के नेतृत्व में दक्षिण से सैन्य बल भेजे गये । कुल मिलाकर मुस्लिम शासकों ने महसूस किया कि भारत में जो हालात हैं, उसमें मदीना की खरब सोसाइटी के लिए लागू किये गये इस्लामी क़ानून पर सख़्ती से नहीं चला जा सका जैसा कि पैगम्बर इस्लाम की सोच थी और जिस में स्टेट चर्च थी और चर्च स्टेट (राजनीति और धर्म, दो अलग अलग नहीं थे) और जो तीस साल से अधिक नहीं चला। उमैया इमाम नहीं रह गये थे। और मात्र राष्ट्राध्यक्ष रहे। अब्बासी जो उनके बाद आये सादे अरब तरीकों को अलग रख दिये, और शान व शौकत से घिर गये और अपने दरबार में प्राचीन ईरान के तौर तरीकों तथा शान व शौकत व औपचारिकता को शामिल कर दिये।

१२५८ में मुगलविजेता ने खलीफा को नष्ट कर दिया। और इस्लामी सभ्यता में एक नया युग शुरू हुआ। एक प्रमुख के साथ एक मुस्लिम समाज़ की परिकल्पना गायब हो गयी। इसलिए आगर हम भारत में मुस्लिम शासकों और फरिश्तानुमा मुसलमानों को सरकार से सम्बन्धित, विशेषकर सरकार और जनता के बीच के सम्बन्धों में अपने विचारों में फर्क होता पायें, तो इस तरह हम को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इल्तुतमिश के समय से लेकर, जिसने जबरन हिन्दूओं पर इस्लाम थोपने के मामले में उल्मा की राय मानने में असमर्थता व्यक्त की, बलबन, अलाउद्दीन खलजी, मुहम्मद तुगलक और शेर शाह तक अधिकांश के विचार थे कि धर्म और बादशाहत का मिश्रण सम्भव नहीं था। कश्मीर, बंगाल और दक्न की रिसायतों के सुल्तान इसी प्रकार की राय रखते थे।

संश्लेशण (निष्कर्ष)

मुगलों ने इस नकारात्मक मुद्रा को सकारात्मक नीति में रूपान्तरित करनेका प्रयास किया। बाबर ने अपनी मृत्यु से पहले हुमायूं को सलाह दी कि हिन्दू और मुसलमान में भेद–भाव न करना अकबर का इस दिशा में साहसिक प्रयास सूर्वविदित हैं अकबर ने देखा हर धर्म में ऐस लोगों की कमी नहीं है जो अपने आप को परिपूर्ण समझते हों, जिन्होंने जन साधारण को अपने धर्म का ज्ञान तोड़ मरोड़ कर दिया। इस प्रकार आस्था की भावना छिपी रह गई अकबर ने ऐसे धर्म के ठेकेदारों की अति दुष्ट साजिशों का शिकार बनने से लोगों को रोकना जरूरी समझा और निश्चय किया कि यदि विभिन्न धर्मों की उत्कृष्ट रचनाओं को सरल भाषा में अनुदित कर दिया जाये तो, वे सच्चाई को अपने आप जान सकेंगे। इस प्रकार उन लोगों का अधिपत्य जो अपने धर्म की वास्तविक भावना को अपने अपने अनुयायियों को नहीं बताते, समाप्त हो जायेगा।

अकबर ने एक साहसी नीति की शुरूआत की ताकि उसके काल में 'आंख बन्द कर के पीछे चलने वाले स्तम्भ' धराशयी हों और धार्मिक मामलों में शोध और जांच का एक नया युग शुरू हुआ।

अकबर के शासन काल में हुए संस्कृत की रचनाओं के अनुवादों को दरबारी पेन्टरों द्वारा चित्रों से सजाया गया था। शाही पुस्तकालय के लिए तैयार की गई महाभारत की प्रतियों में से एक जयपुर के महाराजा के पास थी। अन्य संस्कृत रचनाओ क अनेक अनुवाद, दारा शिकोह की रचनाओं के अतिरिक्त जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब के शासनकाल में किये गये अब्दुर्रहमान चिश्ती (मृत्य १६८३) ने अपनी 'मीरातुल हक़ायक़' में भगवत गीता का विस्तृत वर्णन किया ललित कलाओं, विज्ञान और हिन्दू दर्शन शास्त्र, की अनेक मूल रचनायें भी लिखी गईं। सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय 'तुहफतुल हिन्द' है, जिसे औरंगजेब के शासन काल में फखरुद्दीन मुहम्मद के बेटे मिर्ज़ा मुहम्मद ने कुकुकाश खां की प्रार्थना पर बादशाह के बेटे राजकुमार मुहम्मद मशलउद्दीन जहांदार शाह के लिए रचा था। जहांगीर अपने पिता की सहिष्णुता की नीति से नहीं हटा और शाहजहां कुल मिलाकर, तनिक संकोच के बाद, उन्हीं लाइनों पर चला।

औरंगज़ेब :

औरंगजेब ने घड़ी की सुई पीछे करने की सोची किन्तु उसने भी अन्ततः राजनीति और धर्म को मिलाने की व्यर्थता और अवांछनीयता को महसूस किया। उसके अहकाम (आदेश) जिसे एक विश्वसनीय अधिकारी हमीदुद्दीन खां, जिसको आलमगीर की कटार कहा जाता है, ने संकलित किया था, में निम्नलिखित गद्यांश मौजूद है :–

"दुनियादारी को धर्म से क्या मतलब ? और कट्टरपन धर्म के मामले में अनधिकृत प्रवेश क्यों करे? तुम्हारे

लिए तुम्हार धर्म ओर मेरे लिए मेरा (लकुम दीनुकुम वलीयादीन) अगर कानून पर चला जाता, तो सभी राजाओं और उनकी प्रजाओं का पूर्ण विनाश आवश्यक हो गया होता।" उसका दूसरा फरमान था, "हम को किसी के धर्म से क्या मतलब ? ईसाई अपने मज़हब का पालन करें, यहूद अपने धर्म का पालने करें।"

औरंगज़ेब अपने संकीर्ण दृष्टिकोण के लिए अपने अध्यापक को दोष देता है। बर्नियर लिखता है –

"औरंगजेब ने मुल्लाह स्वालेह से पूछा, " लेकिन आप के पढ़ाने से मुझे क्या ज्ञान मिला?" और शिकायत किया, " क्या यह मेरे उपदेशक का फर्ज नहीं था कि वह मुझे इस धरती के नेशन की प्रमुख विशेषताओं से अवगत कराता, उसके संसाधनों उसकी शक्ति, उसकी लड़ाई के तरीकों, उसके मामलों, उसके धर्मों, उसकी सरकार के स्वरूप, और जहां उसके हित मुख्यतः निहित हों, की जानकारी कराता; और ऐतिहासिक अध्ययन के नियमित पाठ्यक्रम द्वारा राज्यों की उत्पत्ति उनके उत्थानपन, घटनाओं, दुर्घटनाओं अथवा त्रुटियों को जताता जिसके फलस्वरूप इतने बड़े परिवर्तन और शक्तिशाली क्रान्तियां प्रभावित हुए? वह आगे कहता है, "एक राजा के लिए आस पास के राष्ट्रों की भाषाओं को जानकारी अपरिहार्य हो सकती है, किन्तु आप मुझे अरबी पढ़ाते रहे ..... और भूल गये कि एक शहज़ादे की शिक्षा में कितने महत्वपूर्ण विषयों को आच्छादित किया जाना चाहिए। आपने ऐसा किया मानो यह बहुत आवश्यक था कि उसे व्याकरण की अच्छी जानकारी हासिल हो और कानून तथा विज्ञान की भरपूर जानकारी अरबी के माध्यम से ही हासिल हो जाये? ..... मुझे अच्छी तरह याद है कि कई वर्षों के दौरान आपने व्यर्थ और बुद्धिहीन सम्बन्ध–सूचक अव्यय से मेरे दिमाग को परेशान कर रखा था, जिसके समाधान और हल से मस्तिष्क को कोई सन्तोष नहीं मिलता – सम्बन्ध सूचक अव्यय (प्रीपोजीशन्स) जिनकी व्यवहारिक जीवन में कम जरूरत पड़ती है। जब मैं ने आपको छोड़ा मैं विज्ञान में कुछ स्पष्ट और भद्दे शब्दों के प्रयोग से कुछ अधिक हासिल करने का दावा नहीं कर सका, यदि आप ने मुझे यह दर्शनशास्त्र पढ़ाया होता जो दिमाग को तर्क संगत बनाता है और उसे मनुष्य की प्रवृत्ति से काम के साथ चैन नहीं लेने देता। मुझे हमेशा प्रथम सिद्धान्तों को सन्दर्भित करने का आदी बनाया होता, और मुझे सृष्टि की उच्च और पर्याप्त धारणा और उसके हिस्सों की नियमित गति के बारे में बताया होता, तो मैं आपके प्रति उससे अधिक ऋणी रहता जितना सिकन्दर अरस्तू के प्रति था।"

जब मैं इलाहाबाद नगर पालिका का अध्यक्ष था। (१९४८–५३) मेरे पास दाखिल खारिज का एक केस विचारार्थ आया। यह विवाद उस जायदाद का था जिसे सोमेश्वर नाथ महादेव के मन्दिर के लिए समर्पित किया गया था। महन्त के निधन के बाद इसके दो दावेदार थे जिन्होंने कुछ दस्तावेज दाखिल किये जो परिवार के पास थे। यह दस्तावेज सम्राट औरंगजेब द्वारा जारी फरमान थे, जिस के द्वारा मन्दिर भेंट स्वरूप जागीर प्रदान की गई थी। मैं चक्कर में पड़ गया। और सोचा कि फरमान जाली हैं। मैं चकित था कि औरंगजेब, जिसे लोग मन्दिरों को ढ़ाने वाले के रूप में जानते हैं, यह जागीर कैसे एक मन्दिर को दे सकता था, इन शब्दों के साथ कि यह जागीर देवी देवताओं के पूजा और योग के लिए दी जा रही है? औरंगजेब अपने को मूर्तिपूजा के साथ कैसे जोड़ सकता है ?

मुझे विश्वास हो गया कि दस्तावेज असली नहीं हैं। किन्तु किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले मैंने (५१०) सर तेज बहादुर सप्र जो फारसी के महान विद्वान थे, की राय लेना मुनासिब समझा। मैंने उनके सामने दस्तावेज रख दिया और उनकी राय जानना चाहा। दस्तावेजों की जांच करने के बाद डॉ०सप्रू ने कहा कि औरंगजेब के यह फरमान असली हैं। तब उन्होंने अपने मुंशी को वाराणसी के जंगम बाड़ी शिव मन्दिर के मुकदमे की मिसिल लाने को कहा, जिस की कई अपीलें इलाहाबाद हाई कोट में पिछले पन्द्रह साल से लम्बित थीं। जंगम बाड़ी शिव मन्दिर के महन्त के पास भी औरंगजेब के कई अन्य फ़रमान थे जिसके द्वारा मन्दिर को जागीर प्रदान की गई थी।

यह औरंगजेब की एक नयी तस्वीर थी जो मेरे सामने आई। मुझे अत्यधिक आश्चर्य हुआ। डॉ० सप्रू की सलाह के अनुसार मैंने इण्डिया के अनेक महत्वपूर्ण मन्दिरों के महन्तों को पत्र भेजे और उनसे प्रार्थना किया कि यदि मन्दिरों को जागीर देने वाले औरंगजेब के फरमान उनके पास हों तो उसकी फोटो कापी मुझे भेज दें। मुझे एक और अचम्भे की बात मालूम हुई। मुझे औरंगजे के फरमानों की कापियां, महाकालेश्वर मन्दिर उज्जैन के विशाल मन्दिर, बालाजी मन्दिर, चित्रकूद, उमानन्द मन्दिर गौनाड़ और शत्रुंजय के जैन

मन्दिर और अन्य मन्दिरों तथा उत्तरी भारत में फैले गुरूद्वारों से प्राप्त हुई यह फ़रमान १०६५ हिज्री (१६५६) से १०६१ हिज्री (१६८५) तक जारी किये गये थे।

यद्यपि हिन्दुओं तथा मन्दिरों के प्रति औरंगजेब की उदार नीति के यह कुछ एक उदाहरण हैं, तथापि यह बताने के लिए ये काफी हैं कि इतिहासकारों ने जो कुछ उसक बारे में लिखा है वह पक्षपातपूर्ण था और यह तस्वीर का एक पहलू मात्र है। भारत एक विशाल देश है और यहां हजारों मन्दिर फैले हुए हैं। यदि उचित शोधकार्य किया जाये तो मुझे विश्वास है कि बहुत से और उदाहरण मिलेंगे जो औरंगजेब की गैर–मुस्लिमों के प्रति उदारनीति का पता देंगे।

औरंगजेब के फरमानों की तफतीश के दौरान मेरा सम्पर्क, पटना संग्रहालय के पूर्व प्रबन्धक श्री ज्ञान चन्द्र और डॉ० पी० एल० गुप्ता, से हुआ, वे भी औरंगजेब के महान एतिहासिक मूल्य पर शोध कर रहे थे। मुझे इस से प्रसन्नता हुई कि सच्चाई का कुछ अन्य विद्वान खोजकर्ता खोजकर रहे हैं, और जो अत्यधिक कलंकित औरंगजेब की छवि को, जिसे पक्षपाती इतिहासकारों ने भारत में मुस्लिम शासन का प्रतीक बना दिया है, को साफ करने में अपना योगदान कर रहे हैं। एक दिलजले कवि ने दुख के साथ कहा है –

तुम्हें ले दे के सारी दास्तां में याद है इतना,

कि आलमगीर हिन्दूकुश था, ज़ालिम था, सितमगर था।

अनुवादक : मो० हसन अंसारी

हमें अपने अज़ाइम से हटाया जा नहीं सकता

हैदर अली नदवी

चिरागे नूरे अहमद को बुझाया जा नहीं सकता
अंधेरा कुफ्र का आलम में लाया जा नहीं सकता
किसी मस्जिद को हरगिज अब गिराया जा नहीं सकता
खुदा के घर को बुतख़ाना बनाया जा नहीं सकता
न धमकाओ हमें बातिल परस्तो हम मुसलमां हैं
हमें अपने अज़ाइम से हटाया जा नहीं सकता
रहेगी कौमे मुस्लिम हिन्द में अब तान कर सीना
उसे त्रशूल से जालिम डराया जा नहीं सकता
लहू देकर के हम ने इस चमन की आबयारी की
हमारा नाम गुलशन से मिटाया जा नहीं सकता
बहारे हिन्द की रौनक हमारे ही तो दम से है
ये बुहताने ख़िज़ां हम पर लगाया जा नहीं सकता
बुज़ुर्गों ने हमारे जान देकर कर दिया साबित
शहीदाने वतन को अब भुलाया जा नहीं सकता
कहां मुम्किन है तारीखी हकाइक को बदल देना
जबीने वक्त से हमको मिटाया जा नहीं सकता
सनद हमसे वफ़ादारे वतन की मांगने वालो
हमारे कद को दुनिया में घटाया जा नहीं सकता
किसीका खून कर देना किसी का घर जला देना
कभी भी अम्न यूं दुन्या में लाया जा नहीं सकता
हमें मालूम है हमको वतन से कितनी उल्फत है
उसे दिल चीर कर लेकिन दिखाया जा नहीं सकता
जमीं बैतुल मुकद्दस की मुसलमानो सवाली है।
यहूदी गासिबों को क्या हटाया जा नहीं सकता?
मिला है दर्स ये हमको हमेशा सच ही बोलोगे
कभी भी झूठ का तकिया लगाया जा नहीं सकता
जमाने से मुसलमानों की ये तारीख कहती है
कि बेटी को सिफारिश से बचाया जा नहीं सकता
बिला तफरीक हमने तश्नगी सबकी बुझाई है
सबक़ तफ़रीक़ का हम को पढ़ाया जा नहीं सकता
हमें हैदर मिला है हैदरे कररार का जज़्बा
हमें ताकत के आगे अब झुकाया जा नहीं सकता

●●●

हज़रत ज़करिय्या अ़लै० की कहानी

आसिफ अंजार नदवी

नेक औलाद के लिए ज़करिय्या अलै० की दुआ़ :

अल्लाह की नेअ़मतों का वो रंग जो सब चीजों पर चढ़ा हुआ है। और उसकी कुदरत की निशानियां जो तमाम चीजों को घेरे हुए हैं। वही रंग वही ताकत एक बार हजरत जकरिय्या की उस दुआ में जाहिर हुए। जो उन्होंने एक सपुत्र के लिए की थी। जो उनका वारिस बने और याकूब के कबीले का नाम बचाए रखे। उन्होंने अल्लाह से बहुत ही रो गिड़गिड़ाकर ऐसे वक्त में दुआ मांगी थी जब वो बहुत कमजोर हो चुके थे। उनकी हड्डियों में दम न था। बुढ़ापा चारों तरफ से उन पर शिकंजा कस चुका था उनकी बीवी की बच्चा जनने की सारी उम्मीदें ख़त्म हो चुकी थीं। ऐसे वक्त में अल्लाह ने उनकी विपता पर ध्यान दिया। उनकी दुआ कुबूल कर ली। और लोगों के सारे खयालात झूठे साबित हुए। बड़े–बूढ़े का तजुर्बा भी नाकाम हो गया। अल्लाह तआला ने उनको एक सुपुत्र प्रदान किया। "होनहार बिरवा के चिकने–चिकने पात।" वह बच्चा शुरू से ही बड़ा ज्ञानी था। उसके अन्दर समझदारी और ज्ञान कूट–कूट कर भरा था । उसको ईश्वर ने बचपन से ही अपनी किताब तौरात का ज्ञान प्रदान कर दिया था। और उसके हृदय में प्रेम की भावनाएं समुद्री लहरों की तरह उठती थीं। उसके जी में अल्लाह के खौफ नेकी और पुण्य की जोत जलती थी। वह माता पिता के बड़े आज्ञाकारी पुत्र थे। हर समय माता–पिता की खिदमत के लिए उनके सामने तैयार खड़े रहते थे।

जिस समय जकरिय्या अ़लै० ने ईश्वर से प्रार्थना की थी ईश्वर ने उनके दिल को बड़ी तसल्ली दी और उनको अपनी महानता की कुछ निशानियां दिखाई। जिससे ईश्वर का विशाल बल प्रकट होता था। जिससे ये जाहिर होता था कि ईश्वर जो चाहे कर सकता है। और ईश्वर को अपनी मखलूक के जिस्मों पर पूरा अधिकार है कि वो शरीर के जिस अंग को चाहे सही रखे और जिसको चाहे बेकार करे। और जकरिय्या अलै० के सामने ये बात खुलकर आ गयी सारा ब्रहमाण्ड ईश्वर ही के कब्जे में है। वो ईश्वर जो मुर्दे से जिन्दा निकालता है। और जिन्दा से मुर्दा निकालता है। और जिसको चाहे बेहिसाब देता है।

इमरान की बीवी की मन्नत :

हजरत जकरिय्या अलै० के खानदान की एक नेक बीवी जिसे अल्लाह से और उसके दीन से बड़ी महब्बत थी जो इमरान नामक आदमी की बीवी थी उन्होंने ये मन्नत मांनी की अगर उनके यहां लड़का पैदा हुआ तो वो उस बालक को ईश्वरीय मार्ग में भेंट कर देंगी। ताकि वो बच्चा उसके दीन की सेवा कर सके। उन्होंने अल्लाह से ये दुआ की कि उस बच्चे को दीन की सेवा के लिए स्वीकार करें। ताकि उससे उसके दीन को और उसके सेवकों को फायदा पहुंचे। उन्होंने ये दुआ की कि उनका ये पुत्र अल्लाह की ओर लोगों को बुलाने वाला और लोगों का पेशवा हिदायत का चिराग बने।

हे प्रभु ! मैंने तो बच्ची को जन्म दिया :–

उस नेकबीवी का जो इरादा था ईश्वर का इरादा उससे अलग था। ईश्वर अपने बन्दों की भलाई के बारे में ज्यादा जानता है। इमरान की बीवी के यहां बच्ची पैदा हुई तो वो बहुत दुःखी हुई। गोया उनपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। लेकिन बच्ची दूसरी बच्चियों की तरह न थी। बल्कि वो अल्लाह की इबादत में बड़ा शौक रखने वाली और बड़ी हिम्मत वाली खातून थी। हर प्रकार के नेकी और भलाई के कामों पहल करने वाली थी। बहुत सारे मर्दों के मुकाबले में अगर (अल्लाह ने अपनी हिकमत से जिसे वही खूब जानता है) उसे लड़की बनाया। नुबुव्वत का काम औरतों की प्राकृतिक कोमलता की वजह से उनके बस का नहीं सो अल्लाह ने उनकी किसमत मे एक अजीमुश्शान नबी की मां होना लिख दिया था। जिनकी दुनिया वालों की नजर में एक अलग ही शान है। कुरआन इस किस्से को इस प्रकार से प्रकाशित करता है।

"वह वक्त याद करने लायक है जब इमरान की बीवी ने कहा कि ऐ परवरदिगार । जो बच्चा मेरे पेट में है मैं उसको तेरी नज्र करती हूं। उसे दुनिया के कामों से आजाद रखूंगी। तू उसे मेरी तरफ से कुबूल फरमा। तू तो सुनने वाला (और) जानने वाला है।

जब उनके यहां बच्चा पैदा हुआ, और जो कुछ उनके यहां पैदा हुआ था, खुदा को खूब मालूम था। तो वह कहने लगीं कि परवरदिगार ! मेरे तो लड़की हुई है। और नजर के लिए लड़का (मुनासिब था कि वह) लड़की की तरह (ना–तवां) नहीं होता। और मैंने उसका नाम मरयम रखा और मैं उसकी और उसकी औलाद को मर्दूद शैतान से तेरी पनाह में देती हूं।''

नेक युवती पर अल्लाह की कृपा –

ये युवती मरयम अपने दीनी मर्तबे की वजह से हजरत जकरिय्या अलै० की निगरानी में परवरिश पा रही थी। उस पर ईश्वरीय कृपा भी खूब हो रही थी। अल्लाह तआला उस युवती को बेमौसम मेवे और फल खिला रहा था। वो फल भी इस प्रकार के थे जिस प्रकार के फल उस इलाके में पाए न जाते थे। हजरत मरयम जितना जी में आता खाती और जितना मन में आता लोगों को बांट देती। हजरत मरयम पर ईश्वरीय कृपा का जिक्र कुरआन में इस प्रकार आया है। ''तो परवरदिगार ने उसको पसन्दीदगी के साथ कुबूल फरमाया। और उसे अच्छी तरह परवरिश किया और जकरिय्या को उसका मुतकफ्फिल (देख–भाल करने वाला) बनाया। जकरिया जब कभी इबादतगाह में उसके पास जाते, तो उसके पास खाना पाते। (यह सूरत देखकर एक दिन मरयम से) पूछने लगे कि मरयम! यह खाना तुम्हारे पास कहां से आता है। वो बोलीं कि खुदा के यहां से। बेशक खुदा जिसको चाहता है बे शुमार रोजी देता है।''

अल्लाह तआला ने हजरत जकरिय्या अलैहिस्सलाम के जी में ये बात डाली। वो अल्लाह के नबी और बेहद बुद्धिमान थे कि वो ईश्वर जो एक नेक चलन युक्ती जिसकी मानें उसको अल्लाह के लिए वक्फ कर दिया हो और अल्लाह से उसके बरकत की दुआ की हो। उन दुआओं की बरकत से अल्लाह इस पर कादिर है कि वो उस युवती की बेअन्दाजा एकराम करे। ऐसे फलों के जरिये जो या तो वक्त से पहले थे या वकत के बाद। वो खुदा इस बात की भी क्षमता रखता है। कि वो एक ऐसे बूढ़े को जिसका अंग–अंग ढीला हो गया हो और बुढ़ापे ने अधमुआ कर दिया हो और हर तरह की जिस्मानी खराबियां उसके शरीर पर प्रकट की गई हो। उसको बुढ़ापे में औलाद दे दे। जबकि उम्र के ज्यादा हो जाने से और बीवी के बांझ हो जाने की वजह से बच्चे की पैदाइश की सारी उम्मीद खत्म हो चुकी हों। और प्राकृतिक नियम भी यही है कि इस उमर में बच्चे की पैदाइश नहीं होती।

यही सब सोच कर जकरिय्या अलै० की ढ़ारस बंधी। उनके दिल में उम्मीदों की कली खिलने लगी। अपने रब पर उनका ऐतमाद और मजबूत हो गया। उनकी जबान से दुआएं निकलने लगीं। जिस पर फरिश्तों ने आमीन कही। और अल्लाह की रहमत जोश में आ गई। ये जो कुछ हुआ ये अल्लाह के इलहाम का नतीजा था। और ये सब जबरदस्त और जानने वाले अल्लाह की मुकद्दर किया हुआ था कुरआन में इस किस्से का जिक्र यू आया हैं उस वक्त जकरिया ने अपने परवरदिगार से दुआ की (और) कहा कि परवरदिगार ! मुझे अपनी जनाब से नेक औलाद अता फरमा। तू बेशक दुआ सुनने (और कुबूल करने) वाला है।

लड़के की बशारत : अल्लाह ने जकरिया अलै० की ये दुआ कुबूल फरमाली और उनको एक नेक लड़के की बशारत दी। जिसकी जन्म तिथि करीब ही थी।

इन्सान जल्द बाजी का पुतला है। जकरिय्या अलै० ने इस बड़ी घटना के घटने के समय के लिए कोई निशानी जाहिर करने की दुआ की। उन्होंने अल्लाह तआला से कहा कि परवरदिगार। (मेरे लिए) कोई निशानी मुकर्रर फ़रमा। खुदा ने फरमाया निशानी यह है कि तुम लोगों से तीन दिन सिर्फ इशारों से बात कर सकोगे। उन दिनों में तुम अपने परवरदिगार की ज्यादा से ज्यादा याद और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करना। वो कादिर जो चीजों की खासियतों को उनसे अलग कर देने की ताकत रखता है। बोलने वाली जबान को गूंगा कर दिया। जो एक शब्द के लिए भी हिल न सकती थी। वही ईश्वर इस बात की भी ताकत रखता है कि वो अपनी मखलूक में से जिस को चाहे जिस प्रकार की विशेषता और गुण प्रदान कर दे। वो इस बात की भी क्षमता रखता है कि वो अपनी दी हुई विशेषता को छीन भी ले। जो देने की क्षमता रखता है वो छीनने की भी क्षमता रखता है।

अल्लाह की निशानियां और उसकी ताकत :

अल्लाह की कुदरत और निशानियां जकरिया अलै० के जिस्म उनके घर और खानदान में प्रकट होना शुरू हुई। फिर एक दिन हजरत यहया

अलै० का जन्म हुआ। इस बालक के जन्म से हजरत जकरिया अलै० की आंखें ठण्डी हुईं। और उनकी ताकत में बढ़ोतरी हुई। और उनके दावत के काम में नई जान पड़ गयी। कुरआन शरीफ में ये किस्सा कहीं बहुत विस्तार पूर्वक और कहीं संक्षेप में बयान हुआ है। कुरआन में है। "और जकरिया (को याद करो), जब उन्होंने अपने परवरदिगार को पुकारा कि परवरदिगार। मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिस है। तो हमने उन की पुकार सुन ली और उनको यहया बख्श और उनकी बीवी को औलाद के काबिल बना दिया। ये लोग लपक–लपक कर नेकियां करते और हमें उम्मीद और डर से पुकारते और हमारे आगे आजिजी किया करते थे।

यहया की जिम्मेदारी दावत का बोझ यहया अलै० की पैदाइश से उनके माता पिता के विशाल और महान कार्य को सम्भालने वाला था। इस बच्चे ने अपने पिता के दावती मिशन का बोझ अपने कंधों पर उठा लिया। और लोगों को ईश्वरीय धर्म मार्ग की दिशा दिखाने लगा। इस बच्चे में बचपने से ही बुद्धिमानिता शराफत जाहिर होने लगी थी। बचपन ही में उसको विद्या के प्रति बड़ा रोचक पाया गया जब वो जवान हुए तो नेकी और शराफत और अल्लाह के खौफ में अपने जैसे तमाम युवाओं से कहीं आगे थे। मां बाप की मोहब्बत और आम जनता के प्रति उनका प्रेम चर्चा का विषय रहता था। कहीं से गुजर जाते तो लोग उनकी तरफ इशारा करते कि यह नेक चलन यहया इब्न जकरिया हैं। अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में जिस प्रकार से यहया को मुखातब किया है। उससे अल्लाह के नजदीक उनके मरतबे का पता चलता है। अल्लाह फरमाता है । ऐ 'यहया ! (हमारी) किताब को जोर से पकड़े रहो और हम ने उनको लड़कपन ही में हिकमत (दानाई) अता फरमाई थी। और अपने पाससे शफ्कत और पाकीजगी (दी थी) और वह परहेजगार, थे। और मां–बाप के साथ नेकी करने वाले थे और सरकश (और) ना–फरमान नहीं थे। वो जिस दिन पैदा हुए और जिस दिन वफात पाएंगे और जिस दिन जिन्दा कर के उठाए जाएंगे, उन पर सलाम और रहमत (है)।

सम्पादक के नाम

जनाब हारून रशीद सिद्दीकी साहब
अस्सलाम अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू,
आपकी मैगजीन का अंक ३ मई २००४ हम सब ने पढ़ा पढ़कर दिली खुशी हुई लेकिन सबसे अजीब सी बात यह लगी कि मैगजीन में हर जगह पर बहुत ही ठेठ हिन्दी के अलफाज का इस्तेमाल किया गया है या यूं कहा जाय कि आपसी बोलचाल से हटकर ठेठ हिन्दी अल्फाज़ का इस्तेमाल किया गया है जो इस मैगजीन के लिए अटपटी सी बात लगती है। अगर इन अल्फाज की जगह पर उर्दू के बेहतरीन अल्फाज का इस्तेमाल किया जाये तो मैगजीन में चार चांद लग जायेंगे हम सभी पढ़ने वालों को यह उम्मीद ही नहीं बल्कि पूरा यकीन है कि आप हमारी शिकायत पर ज़रूर ध्यान देंगे।
इन्शाअल्लाह तआला। मिर्जा जुनैद बेग
मोहम्मद राशिद अन्सारी, कु० अजरा खानम
मोहम्मद शमीम सिद्दीकी
बसंत मार्केट, गुरूद्वारा रोड, मोहल्ला–हाथीपुर,
लखीमपुर–खीरी
उत्तर प्रदेश पिन–२६२७०१

जनाब एडीटर साहब
अस्सलाम अलैकुम
बाद सलाम के अर्ज है कि आपका रिसाला सच्चा राही जिस्की पांच कापियां मिल रही हैं। सभी कारिईन किताब को पढ़कर मुतमईन हैं। मगर एक शिकायत है कि इसमें सख्त हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। जिससे कम पढ़े लिखे कारिईन को पढ़ने में दुश्वारी पेश आती है। इसलिए आप से दरख्वास्त है कि इससे थोड़ा आसान लफ्ज इस्तेअमाल करें। शुक्रिया।
कारी जफरुद्दीन जमाली
गांव मल्ला, बासनी पोस्ट, चौलू खां त० डीड बाना
जिला नागौर, राज०
उत्तर : आप के पत्र हम को मिले, आपका बहुत बहुत शुक्रिया। बहुत से लोगों ने यही बात ज़बानी कहलवाई है। अगले अंक में इन्शा अल्लाह इस विषय में भारी अन्तर पाएंगे। आपसे और सभी हमदर्दों से अनुरोध है कि वह हमको जब तब लिखते ज़रूर रहें। (सम्पादक)

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki,
Chowk, Lucknow- 2260063

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : डाक्टर लोग कभी–कभी दवा नहीं देते केवल मर्ज़ मालूम करके दवाओं का नुस्ख़ा लिखते हैं और उसकी फीस लेते हैं, या वकील कानूनी मश्वरे देते हैं और उसकी फीस लेते हैं शरअ़ी एतिबार से इसमें क्या हुक्म है?

उत्तर : शरअ़ी एतिबार से इसमें कोई हर्ज नहीं हर किस्म की खिदमत पर बशर्ते कि ह़राम की हद में दाख़िल न हो कोई उजरत निश्चित करना और लेना दुरुस्त है मश्वरे देना हिदायत देना और उसके लिए अपने दिमाग और इल्म का इस्तिअ़माल करना भी एक खिदमत है इस लिए इसकी फ़ीस निश्चित करना भी जायज़ है।

प्रश्न : *क्या आजकल जो तालाबों में मछलियां बेच ली जाती हैं दुरुस्त हैं ?*

उत्तर : हमारे ज़माने में तालाब में मछली की खरीद व फ़रोख्त का मामला कसरत से रायज है जिसमें कभी–कभी मामला शरीअत के नियमों के खिलाफ तय पाता है इसलिए ज़रूरत है कि उसके एहकाम अच्छी तरह समझ लिए जाएं –किसी चीज को बेचने के लिए दो बातें ज़रूरी है सबसे पहले यह कि जो चीज़ बेची जा रही है वह बेचने वाले की मिल्कियत हो, यह तो ज़ाहिर ही है। दूसरे यह कि उसकी सुपुर्दगी मुम्किन हो, अगर वह तुरन्त उसके हवाले करने पर क़ादिर न हो तो बैअ़ (खरीद व फ़रोख्त) दुरुस्त न होगी जैसे भागे हुए जानवर या किसी गुमशुदा सामान को फरोख्त किया जाए कि वह अपने अस्ल मालिक ही की मिल्कियत है लेकिन तुरन्त उसको हवाले करने पर क़ादिर नहीं है।

मछली के सिल्सिले में भी यही तफ़सील है अगर मछली उस व्यक्ति की मिल्कियत में दाख़िल है और वह आसानी से उसके हवाले करने पर क़ादिर भी है तो अब उसकी ख़रीद व फरोख्त दुरुस्त होगी। अगर वह उसकी सुपुर्दगी पर क़ादिर न हो या अभी उसका मालिक ही न हुआ हो तो खरीद व फरोख्त का मामला जायज़ न होगा।

मछली का मालिक बनने की तीन सूरतें हैं –१. एक यह कि मछलियां पालने के लिए ख़ासतौर से किसी ने तालाब में रखा हो तो अब उस मछली और उसकी नस्ल का, वही मालिक करार पायेगा। दूसरी सूरत यह है कि मछली तो उसने न डाली हो लेकिन मछलियों के तालाब में लाने या आने वाली मछलियों के वापस न जाने के लिए उसने कोई उपाय कर रखा है। अब उस तालाब या हौज में आने वाली मछलियों का मालिक वही होगा। तीसरी सूरत यह है कि कोई व्यक्ति मछली का शिकार करके उसे अपने बर्तन में महफ़ूज़ कर ले, चौथी सूरत जिसमें आदमी मछली का मालिक नहीं हो पाता है यह है कि किसी का तालाब हो उसमें खुद मछलियां आ जाएं।

उसकी मेहनत व कोशिश उसके लिये न हो। यहां यह बात कि तालाब उसकी ज़मीन में है काफी नहीं कि उसको उन मछलियों का मालिक करार दिया जाए। अतः फ़ुक़हा ने केवल इसबात पर कि परिन्दा किसी के खेत में बच्चा या अण्डा दे दे इस बात के लिए काफी नहीं समझा है कि उस जमीन का मालिक उन बच्चों और अण्डों का भी मालिक हो बल्कि जो भी उस बच्चा या अण्डा को उठा ले वही उस का मालिक है। (हिदाया – ३/८८)

मछली के आसानी से उस पर कुदरत रखने की दो शकलें होती हैं एक यह कि शिकार के बाद वह किसी बर्तन में महफ़ूज कर ले जैसा कि आम तौर पर हुआ करता है या मछली को किसी ऐसे छोटे गढ़े में रखे जिससे निकालना आसान और सहल हो।

अब ज़ाहिर है कि जिन सूरतों में आदमी मछली का मालिक ही न हो उसमें तो ख़रीद व फ़रोख्त दुरुस्त ही नहीं है और जब मछली का मालिक हो जाए तब भी उसी वक्त दुरुस्त होगी जब ऊपर ज़िक्र की गई दोनों सूरतों में से कोई सूरत पाई जाए।

ऊपर जो तफ़सीलात बयान की गई हैं ह़ाफ़िज़ इब्ने हुमाम (रह०) ने हिदाया की शरह "फत्हुल्क़दीर" में उन को लिखा है और इब्ने आबिदीन शामी (रह०) ने चौथी जिल्द के पेज नं. १०६ पर ज़िक्र किया है। जो इस प्रकार है।

मछली जब गढ़े में दाख़िल हो तो या तो उसने उसको इसी मक़सद के लिए किया होगा या नहीं पहली

शक्ल मे यह उसका मालिक हो जाएगा और किसी को उसके लेने का हक़ न होगा फिर अगर किसी वसीला व जरिया के बिना उस का लेना मुमकिन हो तो उसको फरोख्त करना भी दुरुस्त होगा इस लिए कि वह मिल्क में भी है और उसकी हवालिगी भी मुमकिन है वरना दुरुस्त नहीं होगा इस लिए कि उसके हवाले करना मुमकिन नहीं है। दूसरी सूरत में चूंकि वह इस का मालिक नहीं बनता इसलिए इसकी बैअ़ भी जायज़ न होगी, सिवाय इसके कि गड्ढे में मछली दाख़िल होने के बाद वह उसका रास्ता बन्द कर दे अब वह उसका मालिक हो जाएगा फिर अगर किसी दुश्वारी के बिना उसका लेना मुमकिन हो तो बैअ़ दुरुस्त होगी, वरना नहीं, और अगर उसने गड्ढा तो खुद नहीं बनाया लेकिन मछली लेकर उसमें छोड़ी तो अब भी वह उसका मालिक क़रार पायेगा और अगर किसी दुश्वारी के बिना उस का लेना मुमकिन हो तो बैअ़ जाइज़ हो जाएगी इसलिए कि उसकी हवालिगी मुमकिन है और अगर उस के हवाले करने में दुश्वारी हो तो अब यहां भी बैअ़ जाइज़ न होगी क्योंकि वह इसकी मिल्क में तो है लेकिन उसको हवाले करना मुम्किन नहीं।

(शामी ४/१०६)

प्रश्न : *क्या चिट फंड (CHIT FUND) शरीअ़त के अनुसार दुरुस्त है ?*

उत्तर : चिट फंड की सूरत यह होती है कि एक खास रक़म निश्चित होती है कुछ लोग उसके मिम्बर बनते हैं। वह निश्चित मिकदार में हर माह रक़म अदा करते हैं और कुल रक़म हर माह कुरअ़ अन्दाजी या आपसी इत्तिफाक से किसी एक को दे दी जाती है। जैसे दो हजार की चिट्टी हो और दस जमा करेगा और हर माह किसी एक को यह इकट्ठी रक़म मिल जाया करेगी।

यह सूरत मुबाह है इस लिए कि इसके दुरुस्त न होने की कोई वजह नहीं है। जो व्यक्ति मुद्दत पूरी होने से पहले चिट्टी की रक़म हासिल करता है उसकी हैसियत मक़रूज़ की है और दूसरे मिम्बरों के क़र्ज़ की अदायगी की है। कर्ज़ देने वाला उसको एक मुद्दत की मुहलत देता है इस तरह कि उस पर कोई नफ़ा हासिल नहीं करता यह न केवल यह कि जाइज़ है बल्कि इन्सानी हमदर्दी और इस्लामी अख़लाक़ है।

लेकिन आज कल चिट फंड की कुछ ऐसी सूरतें भी चल पड़ी हैं जिन में मिम्बरों में से कोई जल्द रक़म हासिल करने की ग़रज़ से नुक़सान बर्दाश्त कर लेता है और चिट्टी की निश्चित रक़म से कम ले लेता है इस तरह इस के हिसाब की निश्चित रक़म से कम ले लेता है इस तरह इसके हिस्सा को जो रकम बच रहती है वह कमीशन के तौर पर तमाम मेम्बरों में बांट दी जाती है । यह सूरत नाजाइज़, और सूद मे दाखिल है इस लिए कि कमीशन की सूरत में कर्ज़ देने वालों ने अपने कर्ज पर नफ़ा उठाया और कर्ज़ दे कर मकरूज़ से फ़ाइदा उठाना जाइज़ है और "सूद" में शामिल है।

प्रश्न : *रेलवे बस टिकट की क्या हैसियत है क्या बिना टिकट सफर कर सकते हैं?*

उत्तर : रेलवे, बस टिकट आदि की हैसियत इजारा के वसीक़: की है यह गोया इस बात की सनद है कि हम ने किराया अदा कर दिया इस लिए हमें सवारी करने का हक़ हासिल है। और इजारह में और इसमें केवल इतना अन्तर है कि यहां उजरत पानी किराया पहले वसूल कर लिया जाता है ताकि नज्म में सहूलत हो।

बस और रेलवे में अस्ल मालिक और आजिर हुकूमत होती है, मुसाफिरों की हैसियत किराया दारों और "मुस्ताजिरों" की है टिकट देने वाले हुकूमत के वकील होते हैं। जब यह बात मालूम है कि हुकूमत ने बिना टिकट सफर की इजाजत नहीं दी है तो अब किसी भी सूरत में बिना टिकट सफर करना दुरुस्त नहीं चाहे रेलवे और बस के सरकारी उहदेदार बिना टिकट चलने की इजाज़त ही क्यों न दे दें। टिकट के बिना सफर करना गुनाह है और गोया इस की हैसियत ग़ासिब (हक़ छीनने वाले) की है।

(पृष्ठ ४० का शेष)

रहा इस लफ़्ज़ का शिर्क होना यह आपकी भारी ग़लत फ़हमी है। लुग़त में इसके मअ़ना इस तरह हैं : मालिक, सरदार, ग़ुलाम, आज़ाद करने वाला, आज़ाद किया हुआ, इन्आ़म देने वाला, इन्आ़म पाने वाला, महब्बत करने वाला, साथी, पड़ोसी, मेहमान, शरीक, चचा, बेटा, चचा का बेटा, भांजा, दामाद, रिश्तेदार, वली, ताबिअ़।

मौला इब्नि उ़मर ह़दीस के एक रावी गुज़रे हैं, "मन् कुन्तु मौलाहु फ़ अलिय्युन मौलाहु" ह़दीस में आया है। यह वह लफ़्ज़ है जिसकी निसबत ख़ालिक से भी की जाती है और मख़्लूक से भी। मौला अल्लाह के ख़ास नामों में से नहीं है। इसलिए किसी आ़लिम को मौलाना कहना शिर्क नहीं है।

इबादत की हक़ीक़त (उपासना की वास्तविकता)

बिलाल अब्दुल हयी हसनी

यह मानव माटी से बना है। अतः माटी के गुण नम्रता, निवय तथा दासत्व इस की प्रकृति में सम्मिलित है। इसी वास्तविकता को अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस प्रकार बताया है कि "धरती पर आने वाला हर व्यक्ति अपनी प्रकृति पर आता है फिर उस के मां बाप उसे यहूदी नसरानी या मजूसी बना देते हैं।" यह वह प्रकृति है जो दीने इस्लाम की शक्ल में हर पैदा होने वाले के साथ आती है।

साझा रहित एक अल्लाह के सामने सिर टेकने और उसी के समक्ष अपनी विवशता तथा आवश्यकता प्रकट करना यह वह मानव प्रकृति है जो अस्तित्व में आने वाले हर मनुष्य में पाई जाती है। परन्तु वातावरण के प्रभाव से मानव तीन किस्मों (प्रकार) में बंट जाता है।

एक प्रकार तो उन मनुष्यों की है जिन की प्रकृति किसी कारण पूर्णतया भ्रष्ट हो जाती है और वह अपने विधाता ही को नकार कर नास्तिक हो जाते हैं।

दूसरे वह लोग हैं जो सृष्टि के विधाता को तो मानते हैं पर उसका साझी ठहराते हैं। इन लोगों में विनय तथा नम्रता तो पाई जाती है परन्तु वह उसे गैरुल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त) के सामने भी प्रकट करके अनेकेश्वर वादी बन जाते हैं।

तीसरे वह सफल लोग हैं जिनकी फितरत (प्रकृति) किसी चीज़ से प्रभावित नहीं होती और वह हर आन प्रकाश वान रहती है। अगर उनपर गुनाहों का कुछ मैल आ भी जाता है तो वह तौबा से उसे धो डालते हैं। यह वह अल्लहा के भाग्यवान बन्दे (भक्ति) हैं जिन को दासत्व, विनय तथा नम्रता का बड़ा भाग प्रदान हुआ है। वह केवल खुदाए वाहिद ही के सामने इस का प्रकटीकरण (इजहार) करते हैं और उसी के समक्ष अपना माथा टेकते हैं उसी से प्रार्थना करते हैं उसी से मांगते हैं। उसी से लौ लगाते हैं। उन का जीना मरना उसी के लिए होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है "ऐ मुहम्मद! कह दीजिए कि मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना, मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का पालनहार है।(६:१६२)

यह उपासना की वह वास्तविकता है जो इन्सानी फितरत (मानव प्रकृति) में विद्यमान है। जिसे इस्लाम ने निखार कर दर्पण (आईना) बना दिया। इस्लाम ने इस वास्तविकता को उजागर कर के पूरे जीवन को उपासन बना दिया। इसमें उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति भी है ओर उसके मन की शान्ति भी और यही उस के जन्म का उद्देश्य भी है और उसके अस्तित्व का लक्ष भी।

●●●

हलफुल फुजूल

मु. अरशद नदवी

अत्याचार का बाज़ार गर्म है :

हर धनी निर्धन को और बलवान कमजोर को दबाना चाहता है। कुछ इसी प्रकार अरब का हाल हुजूर सल्ल० की नुबूवत से पहले था लोग निर्धनों को सताते उन का माल नाजाइज तौर पर हड़प लेते और मुसाफिर को गुलाम बनाकर बेच देते। उसी समय एक ज़बीद नामक स्थान का रहने वाला व्यक्ति मक्का शहर अपना माल लेकर व्यापार के उद्देश्य से पहुंचा।

मक्का शहर के कबील–ए–कुरैश का एक सरदार (जिसका नाम आसिम बिन वाईल था) ने उसका सब माल खरीद लिया मगर उसका मूल्य देने से साफ इन्कार कर दिया बेचारा परदेशी अपनी फ़रयाद लेकर दूसरे सरदारों के पास गया कि कोई उसकी सहायता करे लेकिन हर सरदार के पास से नाकाम होकर वापस लौटा और बहुत कुछ सख्त सुस्त सुनना भी पड़ा अन्त में जबीदी ने मक्का शहर वालों से अपनी सहायता की फ़रयाद की जिससे मक्का के न्याय प्रेमी लोगों का हृदय करूणा से भर आया वह सब अब्दुल्लाह बिन जदआन नाम के व्यक्ति के घर पर एकत्रित हुए उसने उनकी मेहमान नवाजी की फिर सब ने मिलकर अल्लाह के नाम पर प्रतिज्ञा ली कि अत्याचार के विरोध में और कमजोर की सहायता में एक हाथ की तरह रहेंगे और जब तक ज़ालिम से मज़लूम का अधिकार ना दिला दें शान्ति से नहीं बैठेंगे। उन्होंने इस प्रतिज्ञा का नाम हलफुल फुजूल रखा सब मिलकर आसिम के मकान पर पहुंचे और उससे ज़बीदी का सामान जबरदस्ती लेकर

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

ज्ञान प्राप्त का महत्व

मुहम्मद अहसन

पवित्र ग्रन्थ कुर्आन में ईश्वर ने फरमाया :

अनुवाद : ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए मजलिस में जगह खोल दो तो तुम जगह खोल दिया करो अल्लाह तुम को (जन्नत में) खुली जगह देगा और जब (किसी ज़रूरत से) कहा जाए खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो। अल्लाह तुम में के ईमान वालों के और उन लोगों के जिन को इल्म अता हुआ है दर्जे बुलन्द करेगा और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब अअ़माल की ख़बर है। (५८:११)

ईश्वर ने इस आयत में यह वादा किया है और घोषणा की है कि ईश्वर उनके पदों को ऊंचा करेगा जो ईमान (विश्वास) वाले हैं और जिनको ईश्वर ने ज्ञान दिया है। ज्ञान प्राप्त करना कोई साधारण बात नहीं है। ज्ञान एक महान पूंजी है एक बड़ी दौलत है जिसको प्राप्त करना बड़े गर्व की बात है। बिना ज्ञान के मनुष्य अन्धे के समान होता है उसकी सोचने समझने की क्षमता अत्यन्त दबी रहती है। आगे बढ़कर उन्नति और विकास के पथ पर वह चल नहीं पाता उसके लिए उन्नति के रास्ते बन्द रहते हैं। जीवन फीका रहता है। यही कारण है कि हमारे आका हजरत मुहम्मद सल्ल० ने ज्ञान प्राप्ति को प्रत्येक मुसलमान के लिए कर्तव्य बताया। अतः ज्ञान प्राप्त करना अति आवश्यक है। बल्कि यह भी फरमाया कि ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग स्वर्ग का मार्ग है।

जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के रास्ते पर चलेगा और उसका उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना ही होगा तो ईश्वर उसके लिए स्वर्ग का पथ आसान कर देगा।

देखिये ईश्वर के सन्देश ने ज्ञान प्राप्त करने को कितना ऊंचा मार्ग बताया है। उसकी खोज में निकलने वालों को क्या अच्छी सूचना दी है। क्या स्वर्ग से बढ़कर कोई और स्थान हो सकता है? क्या जन्नत से बढ़कर एक व्यक्ति की कोई और मन्जिल हो सकती है? क्या जन्नत से बढ़कर और स्थान ऐसा हो सकता है जहां व्यक्ति असम्भव इच्छायें पूरी हो सकें? बिल्कुल नहीं। परन्तु ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिए इसका पाना कितना सुविधा जनक है। ज्ञान का इच्छुक वहां कितनी जल्दी पहुंच सकता है। यही कारण है कि ईश्वर ने साफ साफ शब्दों में फरमाया है कि ज्ञानी और अज्ञानी लोग बराबर नहीं हो सकते। ज्ञान एक प्रकाश है, जो हमें सीधा मार्ग दिखाता है। जिसको ज्ञान प्राप्त होता है उसका स्थान बहुत ऊंचा होता है।

अक्षरों का ज्ञान भी एक ज्ञान है। उनके द्वारा शब्द बनाना फिर वाक्य लिखना भी ज्ञान है अर्थात किसी बात को लिख लेना फिर उस को पढ़ लेना एक ज्ञान है। परन्तु वास्तविक ज्ञान वह है जो परमात्मा का परिचय दे। उर्दू, हिन्दी, अरबी, फार्सी अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान भी ज्ञान है। कोई व्यक्ति दुन्या की बहुत सी भाषाओं का ज्ञान रखता हो लेकिन अपने पैदा करने वाले को न पहचानता हो तो वह अज्ञानी है, जाहिल है। जो व्यक्ति सत्य, असत्य में अंतर न कर सके हक नाहक का भेद न जाने भला बुरा पहचान न सके तो वह चाहे जितना पढ़ा लिखा हो वह वास्तविक ज्ञान से वंचित (महरूम) है।

निःसन्देह साइन्स का ज्ञान लाभ दायक ज्ञान है। इन्जीनियरिंग का ज्ञान कारामद ज्ञान है। डाक्ट्री अर्थात रोगों को पहचानना, दवाओं को पहचानना, दवाओं से रोगों का उपचार करना, अतिआवश्यक ज्ञान है। इन्सान की जरूरतों की चीज़ें बनाने का ज्ञान जैसे भवन बनाना, कपड़े बनाना सवारियां रेल मोटर जहाज आदि बनाना, घड़ी बनाना रेडिया बनाना, इन्टरनेट बनाना, कम्प्यूटर बनाना आदि सब लाभदायक ज्ञान हैं परन्तु इन का लाभ क्षणिक है। केवल इसी दुन्या तक है। इस दुन्या में कुछ समय रहना है। अतः यहां के आराम के लिए इनमें से जितना हो सके अवश्य सीखो लेकिन जहां सदैव रहना है वहां काम आने वाला ज्ञान सीखना और सिखाना अनिवार्य जानो।

सर शमअ़ सा कटाइये,
पर दम न मारिये।
मंजिल हजार सख्त हो,
हिम्मत न हारिये।।
मक्सूम का जो है,
सो वह पहुंचेगा आप से।
फैलाइये न हाथ,
न दामन पसारिये।।

विद्यार्थियों के लिए

वह विद्यार्थी था

मौलाना सलीमुल्लाह ज़करिया

मुहम्मद बिन सईद ने कहा :

"खुदा का खौफ करो ! तुम इस भले आदमी को मार ही डालोगे इस बेचारे को अपनी सराय से न निकालो, यह बहुत दूर सात समन्दर पार से यहां आया है, अगर यह मर गया तो इस का खून तुम पर होगा।"

"हूं ! यह बकी सात समन्दर पार से आया है?

"जी बिल्कुल ! मैं बकी ही के बारे में तुम से बात कर रहा हूं। यह मेरी तुम से पहली प्रार्थना है, तुम मेरी बात मान जाओ। यह बड़े आलिम व मुहद्दिस हैं क्या हम इनको किसी फुटपाथ पर मरने के लिए छोड़ दें?"

"तो मैं क्या करूं? दो साल से तो वह मेरे सराय में मुफ्त ठहरा हुआ है। मैं इसकी हर फरमाइश पूरी करने की कोशिश करता रहा हूं, अब एहसान का बदला यह होगा कि वह यहां पड़े पड़े मर जायेगा, फिर इस की लाश मेरे सराय से उठेगी तो लोग मेरे करीब भी नहीं आयेंगे, यों मेरा कारोबार ठप होकर रह जायेगा।"

"तुम अपने ऊपर रहम करो, अगर तुम्हें इस नेअमत का अन्दाजः हो जाये तो तुम पूरी पूरी रात खुदा का शुक्र अदा करते हुए गुजार दो। तुम इस आदमी की सेवा करो, मुझे आशा है खुदा तुम्हें तरक्की देगा।"

"मौलाना मैं समस्याओं में उल्झा हुआ हूं और आप मुझे फ़ज़ायल सुना रहे हैं। आपको अन्दाजा नहीं इस आदमी की वजह से मेरी कितनी जग हंसाई हो रही है आये दिन लोगों के सामने मुझे शर्मिन्दा होना पड़ता है। हर दिन पौ फटते ही यह हजरत गुदड़ी पहने, तोमड़ी (कशकोल) थामे, लाठी टेकते हुए यहां से निकल पड़ते हैं और भीख मांगते फिरते हैं। अच्छा ! आप मेरी बातों पर हंस रहे हैं। आप मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।"

"नहीं तो ! तुम्हें इस व्यक्ति की हैसियत का अभी तक अन्दाजः नहीं हुआ?"

"ओ हो ! इसकी भी कोई हैसियत है ?"

"जी बिल्कुल उन्दुलुस के बागात अपने अहदे और मंसब को छोड़कर यहां आये हैं। इन्होंने बगदाद तक का इतना थका देने वाला सफर, किसी दोस्त से मुलाकात या माल कमाने के खातिर नहीं किया, बल्कि यह तो हदीस का ज्ञान प्राप्त करने और अबू अब्दुल्लाह की जियारत के लिए यहां आये हैं।"

अबू अब्दुल्लाह का नाम सुनते ही सराय का मालिक नर्म पड़ गया। और उसका चेहरा अबू अब्दुल्ला की अज़मत और अकीदत से चमकने लगा। अचानक उसके लहजे की कड़वाहट, मिठास में बदल गई और वह हैरत से पूछने लगा।

"मौलाना ! क्या यह आदमी स्पेन से बगदाद सिर्फ इमाम अहमद बिन हंबल से मिलने आया है ?" "अजीब ! तो क्या बकी की मुलाकात इमाम साहब से हो गई ? इमाम साहब तो नजर बन्द हैं, किसी से मुलाकात की उन्हें इजाजत नहीं तो इन्होंने कैसे मुलाकात कर ली?

"सुनो ! जब बकी यहां बगदाद पहुंचे तो उन्होंने सब से पहले आपकी सराय में अपना सामान रखा, फिर वह अबूअब्दुझा की तलाश में निकल गये। यह वह दिन थे जब कि हालात बेहद खराब थे, और इमाम साहब को किसी से मिलने जुलने की इजाजत नहीं थी। यहां तक कि लोग उनका नाम तक लेते हुए घबराते थे कि किन्हीं बादशाह के जासूसों में से किसी को खबर न हो जाये और उस पर मुसीबत टूट पड़े। जब बकी को यह बातें मालूम हुईं तो वह बहुत परेशान हुए। वह जामे मस्जिद की तरफ चल दिये। वहां हदीस के विद्वानों के हल्के लगे हुए थे जो लोगों को कुर्आन व हदीस की तालीम दे रहे थे। वह चलते रहे, हल्कों को देखते रहे। चलते चलते बकी एक बड़े हल्के के पास पहुंचकर रूक गये। सबसे पहले मैंने उनके विचित्र पहनावे को देखा। सलाम व दुआ के बाद उन्होंने पूछा यह शेख (धर्मगुरू) कौन हैं ?

मैंने कहा, "यहिया बिन मुईन। बकी उनका नाम पहले सुन चुके थे, और यहिया कोई गुमनाम व्यक्ति तो थे नहीं वह इस्लामी दुनिया में मशहूर थे। बकी थोड़ी देर शैख के दर्स के पास खड़े रहे, जगह मिली तो आगे बढ़े और कहने लगे, "शैख ! अल्लाह आप पर रहम फ़रमाये। क्या एक अजनबी

मुसाफिर कुछ मसायल पूछ सकता है?" शैख ने उन्हें इजाज़त दे दी। बकी ने शैख से सवालात पूछने शुरू कर दिये। काफी देर तक वह शैख से मसायल पूछते रहे ..... अचानक आखिर में उन्होंने कहा, "अहमद बिन हंबल के बारे में आप की क्या राय है?"

इस सवाल से गोया मजमे को सांप सूंघ गया और शैख के चेहरे पर अचरच के आसार दिखाई देने लगे, वह तअज्जुब से उस मुसाफिर को देखने लगे जैसे कह रहे हों, "अहमद बिन हंबल जैसे लोगों के बारे में भी पूछा जाता है?" ऐसा लगा जैसे शैख कुछ संकोच कर रहे हों और परेशान हो रहे हों। लेकिन ईमानी हरारत ने काम दिखाया और उन्होंने बादशाह के जासूसों की परवाह किये बिना अजनबी से कहा, "तुम कहां से आये हो? हम तम्हें अहमद के बारे में बतायेंगे।"

फिर थोड़ी देर के लिए वह खामोश हो गये जैसे वह कुछ सोच रहे हों, फिर उन्होंने ऐसी हिम्मत व साहस से इमाम साहब के हालात बयान किये कि लोग दंग रह गये। और चिन्तित हुए कि सरकारी अमला उन पर हाथ न डाल दे। शैख ने कहा "अहमद बिन हंबल मुसलमानों के लीडर हैं और सबसे बेहतरीन और बड़े कुर्आन व सुन्नत के आलिम (विद्वान)।"

आखिर यह अजनबी लोगों से पूछता, हुआ इमाम साहब के घर पहुंच ही गया। सराय का मालिक इस घटना को सुनकर हैरान होकर कहने लगा, "मौलाना! तो आपके विचार से बकी ने नजरबन्दी के दिनों में इमाम साहब से मुलाकात की हैं।

बिल्कुल ! बकी ने इमाम का दरवाजा खटखटाया, इमाम ने दरवाजा खोला तो एक अजनबी को सामने पाया, बकी ने उनको देखते ही कहा, "हजरत ! मैं बहुत दूर से आप से मिलने आया हूं।"

इमाम साहब ने फरमाया, " खुश आमदीद (स्वागतम्) ! बेटा तुम कहां से आये हो?"

"स्पेन से"।

"अफ्रीका से ?

"नहीं हजरत! अफ्रीका से भी दूर। मुझे अपने वतन तक पहुंचने के लिए समन्दर के रास्ते जाना पड़ता है।"

"अच्छा ! तुम तो बहुत दूर से आये हो बेटा ! कैसे आना हुआ?"

"हजरत मैं आपसे पढ़ने आया हूं। आप से हदीस पढ़ने आया हूं।"

"लेकिन जैसा कि तुम देख चुके हो मैं नजरबन्दी के दिन गुजार रहा हूं, अगर तुम इस तरह हमारे पास आते रहोगे तो सरकारी लोग तुम्हें तंग करेंगे।

"हजरत ! मैं आप से इल्म हासिल करते हुए किसी दुख व परेशानी से नहीं घबराता ....."

"लेकिन बेटा ! इस तरह तो मकसद हासिल न हो सकेगा।"

बकी गहरी सोच में डूब गया। अचानक उसे एक तरकीब सूझी। उसने कहा, " हजरत ! मैं रोज़ भिखारी के रूप में आपके दरवाजे पर आवाज लगाया करूंगा,"खुदा के लिए कुछ दे दो," फिर आप भीख देने के बहाने मुझे घर के अन्दर बुला लें और मुझे हदीस पढ़ा दें।"

"शर्त यह है कि दूसरे विद्यार्थी और आलिम पर जाहिर न करोगे।"

"बिल्कुल नहीं हज़रत!" बकी ने ताबेदारी से कहा और घर से निकल आया।

मुहम्मद बिन सईद ने सराय के मालिक से कहा, "तो यह व्यक्ति रोजाना भीख मांगने का बहरूप बदल कर इमाम साहब के पास जाता और उनसे इल्म हासिल करता, और जनाब आप यह समझते रहे कि यह "भिखमंगा" आपके लिए अपमान, रूसवाई और जिल्लत का सबब है।

बकी बिन मुखल्लद ..... अब यकायक सराय के मालिक की निगाह में बहुत बड़ा हो गया था, बहुत हीं बड़ा ..... क्योंकि वह लोग इल्म के कद्रदान हुआ करते थे, अब वह कमरा जिस में बकी ने दो साल गुजारे थे, मालिक को सितारों में चांद की तरह यकता नजर आने लगा था और उसमें पड़ा हुआ बकी जो काफी दिनों से बीमार था उसे बादशाह की तरह बड़ा आदमी महसूस होने लगा था, इसी बेयकीनी की हालत में उसने पूछा,"तो यह इमाम अहमद बिन हंबल के शागिर्द हैं?"

जी बिल्कुल ! एक दो दिन नहीं बल्कि जब तक इमाम नजरबन्द रहे, बकी उनसे इसी तरह जाजाकर पढ़ते रहे, यहां तक कि आजमाइश खत्म हुई और मुतवक्किल बादशाह बना और उसने मजहब अहले सुन्नत को जिन्दा किया और बिदआत का खात्मा किया, अल्लाह इमाम साहब को नेक बदला दे उन्होंने बहुत तकलीफें उठाईं, उनसे अल्लाह ने "ख़ल्के कुर्आन" के मसअले मे वह काम लिया जैसा कि दीन से फिर जाने के जमाने में हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) से लिया। इमाम साहब बकी की बहुत इज्जत करते हैं और वह अक्सर अपने शागिर्दों को कहते हैं, "तालिब इल्म" (शिक्षार्थी) तो बकी को कहा जाता

है।

सराय का मालिक बेताब हो चुका था, वह कहने लगा "मौलाना आपको अल्लाह अच्छा बदला देवे, आपने मुझे इस व्यक्ति के मर्तबः व हैसियत के बारे में बताया, वल्लाह मैं बड़ा भाग्यशाली हूं। चलें! बकी के पास चलते हैं।

बकी अपने कमरे में अकेले दर्दऔर बुखार से कराह रहे थे बीमारी ने उनको बिल्कुल खत्म करके रख दिया था। खोखले बांस की तरह उनका शरीर बिल्कुल सूख चुका था। अपनों से दूरी और वतन की यादों ने उनको बेहाल कर दिया था। कमरे में एक फटा पुराना टाट बिछा था जिस पर बकी लेटे हुए थे, उनका सर तकिये के साथ टिका हुआ था, किताबें आस पास बिखरी पड़ी थीं। जब बीमारी का जोर कुछ कम हो जाता तो सामने रखी किताब पर एक नजर डाल लेते, फिर तकलीफ बढ़ जाती तो आराम करने की कोशिश करते। जब यह दोनों कमरे में दाखिल हुए तो उन्होंने देखा कि बकी एक किताब पर झुके पढ़ने में मगन हैं।

इन दोनों को कमरे में आये थोड़ा ही समय हुआ होगा कि उन्होंने आस पास शोर सा महसूस किया, शोर बराबर बढ़ता जा रहा था जैसे यह सब कुछ सराय के अन्दर हो रहा हो। उन्होंने खिड़की से झांक कर नीचे देखा तो हर तरफ सर ही सर नजर आ रहे थे, जहां तक नजर जाती सराय की तरफ इन्सानों का बढ़ता हुआ सैलाब जिसे देखकर मालिक के औसान खता हो गये। वह तेजी से नीचे भागा ..... आखिर यह कैसा हंगामा है? उसने सर खुजाते हुए सोचा ..... कहीं बादशाह का जुलूस तो नहीं ..... लेकिन शाही जुलूस ऐसा तो नहीं होता ..... उसने करीब खड़े बूढ़े से पूछा, "कौन आया है, कहां जा रहा है?"

बूढ़े ने कहा, "अबू अब्दुल्लाह हैं, सुना है आप की सराय में किसी बीमार की अयादत के लिए आ रहे हैं। अबू अब्दुल्लाह ..... अहमद बिन हंबल ..... वह खुशी के मारे चिल्लाने लगा फिर वह पागलों जैसी हरकत करने लगा ... ...मैं उनको कहां बिठाऊंगा ? उनकी कैसे खिदमत करूंगा? लेकिन लोगों को उसकी कोई परवाह नहीं थी, वह तो पांव की उंगलियों पर खड़े, आंखें फाड़े इमाम साहब को एक नजर देखने के लिए बेताब थे ..... बाजारों से तिजारत करने वाले गयब, दुकानों से दुकानदार गायब, और किसी मदरसे में कोई शिक्षार्थी बाकी न रहा। सबके सब महान इमाम अहमद बिन हंबल की एक झलक पाने के लिए बग़दाद की इन तंग व तारीक गलियों में सिमट आये थे, जहां सराय थी।

जैसे जैसे मजमा करीब आता गया कलम व दवात लिए विद्यार्थियों का घेरा उनके आस पास तंग होता गया। इमाम साहब जो भी फरमाते फौरन हजारों कलम हरकत में आ जाते और उनकी बात लिख ली जाती। पूरा बगदाद जिस में बीस लाख आदमी रहते थे, ऐसा लगता था जैसे इमाम साहब के स्वागत के लिए उमड़ आया है।

इमाम साहब बकी के कमरे में दाखिल हुए। बकी का पंजर जैसा शरीर बिस्तर पर पड़ा था, उन्होंने बकी से कहा, "ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! तुम्हें सवाब की खुशखबरी सुनाता हूं अल्लाह तुम्हारे साथ आफियत (कुशलता) का मामला फरमाये और तुम्हें अच्छा कर दे।"

इमाम साहब की दुआ कुबूल हुई, बकी अच्छे हो गये और अल्लाह ने स्पेन को उनके इल्म व फ़ज़ल की रौशनी दी और लोगों के दिल बकी के लिए खेती बन गये जिसमें वह रसूल सल्ल० की मुहब्बत के बीज बोते रहे।

(सियर एलामुलन्नबला खण्ड–१३ पृ. २६२)

(उर्दू मासिक "रिजवान" लखनऊ, मई २००४ से साभार)

प्रस्तुति व रूपान्तरकार :

मो० हसन अंसारी

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

फ़िक्रे नशेमन

१८ अप्रैल २००४ को हुए दीनी तालीमी कौंसिल उत्तर प्रदेश के इजलास में उसके जनरल सिक्रेटरी डा० मसऊदुल हसन उसमानी की रिपोर्ट से कुछ महत्वपूर्ण बातें ।

दीनी तालीम एक इस्लामी कर्तव्य है और दीन की स्थिरता और सुरक्षा और मुसलमानों के मिल्ली वजूद के लिए आवश्यक है। सेकुलर तालीम के ज़माने में अगर दीनी तालीम का प्रसार प्रचार सार्वजनिक सर्वव्यापी कोशिश न की गई तो मुसलमानों की आने वाली पीढ़ी इस्लामी परमपरा, आस्था और आचरण से दूर हो जाएगी और अन्ततः मिल्ली वजूद समाप्त हो जाएगा।

दीनी शिक्षा और दीक्षा की आवश्यकता इस वजह से और बढ़ गई है कि वर्तमान शिक्षा के हानिकारक प्रभाव मुसलमान बच्चों में फैलते जा रहे हैं। अतः यह आवश्यक है कि मुसलमान अपने इस कर्तव्य को समझें और दीनी तालीम व तर्बियत (शिक्षा व दीक्षा) का बड़े पैमाने पर प्रबन्ध करें। सूबाई दीनी तालीमी कौंसिल का यह इजलास (अधिवेशन) इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नवत कार्यप्रणाली तय करता है।

१. सभी अरबी मदर्सों में प्रारम्भिक कक्षाएं स्थापित की जाएं जिनका स्तर सरकारी स्कूलों की कक्षा ५ तक हो और जिनमें दीनी तालीम उर्दू भाषा में दी जाए।

२. वह तमाम हाईस्कूल और इन्टर कालेजों में, जो मुसलमानों के प्रबन्ध में चलते हैं, वहां भी इस प्रकार प्रारम्भिक कक्षाएं खोली जाएं।

३. जिन स्थानों पर आम स्कूल स्थापित हैं वहां स्वतः पोषित (अपनी आमदनी पर चलने वाले) सुबह या शाम की कक्षाएं खोली जाएं जिन में उन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को दीनी तालीम दी जाए।

यह एक खाका था जिसके अनुसार दीनी तालीमी कौंसिल ने प्राइमरी स्तर तक प्रारम्भिक शिक्षा का एक सुदृढ़ व्यवस्था तैयार की है। इस का अपना पाठ्यक्र है, अपनी पुस्तकें हैं। कोशिश यह की जाती है कि बच्चे पांचवीं कक्षा तक दीन की बुनियादी और महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर लें, उर्दू लिखना पढ़ना उन्हें आजाए, कुर्आन पाक ख़त्म कर लें और यह बात उन के ज़ेहन में बैठ जाए कि वह मुसलमान हैं और उनकी एक मिल्ली पहचान है। इस के बाद वह उच्च शिक्षा के लिए किसी बड़े दीनी मदरसे में जाएं या किसी सरकारी या प्राइवेट स्कूल व कालेज में सामान्य शिक्षा प्राप्त करें और उसकी राह से दुन्यावी तरक्की करें। इस सिलसिले में एक बड़ी रूकावट कक्षा ६ में दाख़ले की थी, वह दीनी तालीमी कौंसिल की कोशिशों से दूर हो गई। एजूकेशन कोड की धारा १७३ में संशोधन कर के यह इजाज़त सरकारी तौर पर हासिल हो गई है कि मकतब के बच्चों का दाख़ला टेस्ट लेकर कक्षा–६ में किया जाएगा।

मुसलमानों के जनरल तालीम के स्कूल और कालेजों की समस्याओं पर ग़ौर करने के लिए दीनी तालीमी कौंसिल के एक परस्ताव के अनुसार अल्प संख्यक शिक्षा संस्थाओं की एसोसिएशन (**The Minorities Educational Institutions Association U.P.**) का गठन हुआ और पिछले तीस वर्षों से कौंसिल से सम्बद्ध और सरगर्म है। नियमानुसार इसका संविधान अलग बना दिया गया है। इस समय जनाब सैयद हामिद साहब इसके सरपरस्त और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ के वाइस चांसलर इस के अध्यक्ष तथा प्रोफ़ेसर नफ़ीस अहमद साहब इसके जनरल सिक्रेटरी हैं। शिक्षा संस्थाओं को अल्प संख्यक विद्यालय की हैसियत दिलाने और इस काम के लिए शासन से बराबर संपर्क रखना और इन संस्थाओं के अन्य समस्याओं को शासन के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए इस एसोसिएशन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सरकारी शिक्षा व्यवस्था व पाठ्यक्रम में अकीद–ए–तौहीद (एकेश्वरवाद) के विरुद्ध और धर्म निरपेक्ष पाठ सामग्रियों को सम्मिलित किये जाने पर दीनी तालीकी कौंसिल की स्थापना हुई थी। चुनानचः तुरन्त इस प्रकरण पर काम शुरू किया गया और सबसे पहले ज़फ़र अहमद सिद्दीक़ी साहब ने सरकारी पाठ पुस्तकों का जाएज़ा (समीक्षा) मुरत्तब किया इसके बाद इस तरह का दूसरा जाएज़ा हबीबुल्लाह आज़मी साहब ने

तैयार किया। इन दोनों जाएज़ों से सूरते हाल की संगीनी (प्रचंडता) का अन्दाज़ा हुआ और मुसलमान चौंक उठे कि उनके बच्चे सरकारी स्कूलों में दीन और शरीअ़त (इस्लामी नियमों) के विरुद्ध क्या पढ़ रहे हैं। वर्तमान में मुहम्मद हसन अंसारी साहब और हबीबुल्लाह आज़मी साहब एक नए जाएज़े की तरतीब में लगे हुए हैं। दीनी तालीमी कौंसिल की ख़ामोश कोशिशों से सरकारी पाठ पुस्तकें काफ़ी हद तक ठीक हो गई हैं। परन्तु अभी तक कुछ बाक़ी हैं और बीच में कोई बड़ा धमाका भी हो जाता है।

कृपलानी कमेटी रिपोर्ट १९६२ और १९८८ सरकारी पाठ्यक्रम, विमेन्स चिलडरेन्स ऐक्ट, शिक्षा संस्थाओं पर लेबर ऐक्ट और हाउस टेक्स, हिन्दू देवमाला की कल्प योजना, मज़हबी मिल्ली अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थाएं की समस्याएं यह ऐसे प्रकरण हैं जो तूफ़ान बन कर आए और पूरी मिल्ली व्यवस्था को तहसनहस करने पर तत्पर थे। लेकिन दीनी तालीमी कौंसिल ने हर मौक़े पर नेतृत्व का फ़रीज़ा अदा किया और उसके पदाधिकारी पूरी ज़िम्मेदारी से मैदान में कूद पड़े और हमेशा ऐसे ख़तरनाक तूफ़ानों का मर्दानावार मुक़ाबला करके उनकी शिद्दत (प्रचण्डता) कम या समाप्त कर दी।

इस्लाम के महान विचारक स्वर्गीय सैयद मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने पूरे चालीस वर्ष अपने भाषण और लेखन और अपने विचारों की शक्ति से इस महाज़ को गर्म रखा और इस अवध के तमाम भाषणों को इस सेवक ने "तकबीरे मुसलसल" के नाम से प्रकाशित कर दिया है। स्वर्गीय काज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी और अन्य मार्गदर्शकों के लेख संकलन की प्रकिया में हैं और दीनी तालीमी कौंसिल का पूर्ण इतिहास भी तैयार किया जा रहा है जो जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा।

दीनी तालीमी कौंसिल ने दो महाजों पर एक साथ काम किया, हिम्मत और बेबाकी के साथ शासन का ध्यान भी आकृष्ट किया और ख़तरनाक इन्क़लाब का सामना भी बहादुरी के साथ किया और संवैधानिक सुरक्षा की एक स्पष्ट तसवीर भी पेश कर के शासन के सामने तसवीर साफ़ कर दी। इस प्रकार की सेवाएं हमेशा समय पर सम्पन्न की गईं और कभी किसी प्रकरण में एक मिनिट की भी देर नहीं की गईं।

दूसरा महाज़ स्वयं अपनी ज़िम्मदारियों का था जिस को दीनी तालीमी कौंसिल ने अच्छी तरह पूरा किया लेकिन इस के जवाब में चिन्ता और क्रियात्मक सहयोग का जो दृश्य होना चाहिए था वह नहीं हो सका। इस समय की दशा अधिक चिन्ताजनक और विचारणीय है। ज़िलों में एक आर्गनाइज़र की नियुक्ति, पदाधिकारियों के अतिरिक्त एक कमेटी की स्थापना और ख़र्च के लिए अधिक से अधिक पांच हज़ार रूपया प्रतिमास की व्यवस्था कोई बहुत कठिन काम नहीं है दूसरे निजी और अवामी कामों में इस से बहुत अधिक ख़र्च हो जाता है। परन्तु यह स्थायी दीनी और बुन्यादी काम जिस पर इस्लाम के महान विचारक स्वर्गीय मौलाना अलीमियां के कथनानुसार "मिल्लते इस्लामिया की उन्नति जिस काम पर निर्भर है वह केवल इस कारण पूर नहीं होता कि अब तक हमने इसकी अहमियत को महसूस नहीं किया और इसके दूरगामी प्रभाव और इसके दूरगामी परिणाम हमारी आंखों से ओझल हैं।"

इस समय ज़रूरत यह है कि हमारे माननीय सदस्य कौंसिल जिलों के दौरे पर तशरीफ़ ले जाएं या अपने जिलों की अनजुमन तालीमाते दीन को मज़बूत करने की फ़िक्र करें तो एक सार्वजनिक वातावरण (अवामी फ़िज़ा) तहरीक के हक़ में काइम हो जाएगा। यदि पदाधिकारी, आर्गनाइज़र के अतिरिक्त स्वयं भी सफ़र करें तो सफर करने वाले साथियों की हिम्मतें बुलन्द होंगी एक नया उत्साह उत्पन्न होगा और आम मुसलमानों में हौसला पैदा होगा। जिन ज़िलों में इस प्रकार काम हो रहा है वहां इसके प्रभाव दिखाई दे रहे हैं और हम ऐसे मिल्लत के दर्दमन्दों के आभारी हैं।

हज़रात ! दीनी तालीमी कौंसिल ने जिस संगठात्मक स्वरूप पर अधिक जोर दिया है उसकी अहमियत तथा सार्थकता का एहसास इस समय अधिक हो रहा है। हमने जिन समस्याओं पर अब तक क़ाबू पाया है उसमें एक जुट होने की शक्ति के प्रदर्शन का दखल रहा है। मकतबों का अनजुमने तालीम से इलहाक़ (सम्बन्द्धता) और ज़िला अनजुमन का बराबर केन्द्री कार्यालय से सम्पर्क रखने के बिना किसी आन्दोलन को सक्रियता प्राप्त नही हो सकती।

सरकारी प्राइमरी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए चन्द किलो चावल और चन्द पैसों की योजना आई तो मकतबों के बच्चे भी मकतबों से निकल कर वहां जाने लगे। वहां के ग़ैर दीनी वातावरण को आसानी से स्वीकार कर लिया गया। कुर्आन पाक और उर्दू तालीम से रिश्ता तोड़ लिया गया और बच्चों को उस ख़तरनाक सूरतहाल के हवाला कर दिया गया जिस के लिए हम बराबर मांग करते

रहते हैं जिसे हम अवैधानिक और ग़ैर इख़लाक़ी समझते हैं और मासूम मुसलमान बच्चों की दीनी फ़िक्र के लिए हानिकारक समझते हैं लेकिन जब दीनी दर्दमन्दी और दुन्यावी लाभ में फैसले का समय आता है और चन्द्र किलो चावल और चन्द पैसों की कुर्बान गवाह पर सब कुछ कुर्बान कर देते हैं। हुकूमत से मांग की गई कि सभी मकतबों में भी यह सुविधा दी जाए तो इसे स्वीकार नहीं किया गया। हुकूमत का मकसद बच्चों को सहायता देना नहीं है बल्कि मकतब के दीनी शिक्षा व्यवस्था पर चोट पहुंचाकर उसे कमज़ोर कर देना है। माद्दी ज़ेहन (भौतिक सुविधा की इच्छा) यहां तक पहुंची है कि अब यह भी पूछा जाने लगा है कि यदि मकतबों का जिला अंजुमन से इलहाक (सम्बद्ध) किया जाए तो उन्हें क्या मिलेगा यह बात बिलकुल साफ़ है कि हम अपने मकातिब को कोई माली सहायता नहीं दे सकते, चाहते हुए भी हम इसके सक्षम नहीं हैं। लेकिन यह सवाल ज़ेहनों में इसलिए आता है कि हमने खुद को इसी विचार का बन्दी बना लिया है।

दीनी तालीमी कौंसिल ने प्राइमरी स्तर पर जो पाठ्यक्रम और शिक्षा व्यवस्था काइम की है और सरकारी किसी सहायता के बिना स्वतः पोषित और आज़ाद मकतब की स्थापना पर ज़ोर दिया है, इसका बुन्यादी कारण यही है कि इस अवध में अपने बच्चों की दीनी तालीमी और दीनी जेहन, दीनी फ़िक्र बल्कि कुर्आनी फ़िक्र और अपनी मात्र भाषा उर्दू की शिक्षा की फ़िक्र और इन सबके साथ सामाजिक रूप से बच्चों को एक इस्लामी सांचे में ढालने की फ़िक्र हमें हर हाल में स्वयं करनी है। हुकूमत के सामने भीख का कटोरा लेकर नहीं जाना है। इस अवध में कुर्आन पाक और उर्दू शिक्षा से वंचित रह जाने का ख़तरा न रह जाए तो फिर उन्हें ऐसे स्कूलों में दाखिल किया जा सकता है जहां दुन्यावी पाठ्यक्रम से उनका वास्ता पड़ता है।

वर्तमान में अंग्रेजी मीडियम स्कूलों का रिवाज हो गया है। इसकी अहमियत से भी इनकार नहीं किया जा सकता । लेकिन ऐसे स्कूलों में पढ़ने वाले मुसलमान बच्चों के लिए दीनी तालीमी व तर्बियत की व्यवस्था भी आवश्यक है। दीनी तालीमी कौंसिल ने ऐसे बच्चों के लिए सुबह या शाम को दीनी तालीम की योजना बनाई थी। वर्तमान में इस पर कार्य करना आवश्यक है। वालदैन और अभिभावकों को भी इस पर ग़ौर करना चाहिए।

दूसरी बड़ी समस्या दीनी तालीमी कौंसिल की पुस्तकों के जाली एडीशन है। मकतबा और किताबों की बिकरी आमदनी का एक मात्र साधन हैं। इस ग़ैर दीनी एख़लाक़ी हरकत से पूरी व्यवस्था प्रभावित हुई है और दुखद बात यह है कि यह सारा ग़ैर दीनी काम दीनदार लोग अंजाम दे रहे हैं। दीनी संस्थाओं और कुतुबखानों में यह खिदमत अंजाम दी जाती है। बेचने वाले भी मुसलमान खरीदने वाले भी मुसलमान।

"अक़रबा मेरे करें खून का दावा किस पर"

वह अल्लाह के सामने जवाब देह होंगे लेकिन दुन्या में चन्द पैसों के लिए वह इस हक़ीक़त को भुला बैठे हैं। अल्लाह तआला उनके हाल पर रहम फ़रमाए।

उत्तर प्रदेश के अतरिक्त दूसरे प्रान्तों में भी दीनी तालीमी कौंसिल की तरह कार्य प्रारम्भ हो चुका है। वहां के हज़रात आप से सही मार्गदर्शन चाहते हैं। कौंसिल के संविधान के लिहाज़ से इसका कार्य क्षेत्र सीमित है लेकिन काम की महत्व के पेशे नज़र प्रांतों की सम्मितियों के साथ सम्पर्क आवश्यक है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु कुल हिन्द सतह पर एक वफ़ाक बन जाए।

ज़िला आर्गनाइज़र की हैसियत तहरीक के लिए रीढ़ की हड्डी की है। मकतबों की स्थापना, स्थिरता, मुआइना, परीक्षा और मुसलसल दौरा आर्गनाइज़र के बिना सम्भव नहीं है। जिन जिलों में आर्गनाइज़र नहीं हैं, वहां अंजुमन तालीमाते दीन के ज़िम्मेदारान के लिए कार्य करना कठिन होता है और केन्द्रीय दफ़्तर से कोई सम्पर्क भी नहीं रहता है।

इस्लाम के महान विचारक मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी ने बहुदा इस पलेटफ़ार्म से आपको पुकारा है। आज भी दर्द में डूबी हुई हज़रत वाला (रह०) की आवाज़ गूंज रही है। सुनलीजिए और पैग़ाम के तौर पर अपने साथ ले जाइये। इससे अच्छी जादेराह (आखिरत की मार्ग सामग्री) हम पेश करने से असमर्थ हैं। इंशाअल्लाह आप भी इस को अपने लिए बेहतरीन तुहफ़ा क़रार देंगे।

हज़रात ! मैं अन्त में एक बार फिर आपका शुक्रिया अदा करता हूं। अल्लाह तआला आप के सफर और इस समारोह में आपकी शिर्कत को कुबूल फ़रमाए और दीन व मिल्लत के लिए इसे बाबर्कत और रहमत का साधन बना दे। अध्यक्ष महोदय ने जो ज़िम्मेदारी पहली बार मेरे सुपुर्द की है और जिसको आपका स्नेहपूर्ण समर्थन भी प्राप्त है, वह एक कठिन मरहला है। इसमें आपके सहयोग की आवश्यकता है। मैं आपसे मार्गदर्शन और सरपरस्ती और अपने लिए विशेष दुआ की नर्मता पूर्वक प्रार्थना के साथ विदा लेता हूं।

बच्चों के लिए स्वस्थ माहौल का प्रबन्ध

और हमारा दायित्व

इस समय पूरी दुनिया में स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए बड़ी प्रभावी कोशिशें की जा रही हैं, नित नए रोगों के प्रकट होते ही अन्तर राष्ट्रीय सतह पर उनसे निपटने की भाग दौड़ शुरू हो जाती है लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद फूल जैसे कोमल और मासूम दस करोड़ बच्चे आज भी स्वास्थ की बुनियादी सहूलतों से वंचित हैं। बाल अधिकारों की रक्षा की ऊंची ऊंची घोषणाओं के बावजूद और बाल दिवस मनाने के साथ ही इस समय २५ करोड़ से अधिक बच्चे मेहनत मज़दूरी करके घर वालों के लिए सहारा बने हुए हैं, साठ (६०) करोड़ बच्चे दरिद्रता का जीवन व्यतीत करने पर विवश है, कि चालीस करोड़ बच्चे जिन्सी अत्याचार के शिकार हैं, बीस लाख युद्ध की आग में झुलस रहे हैं और प्रतिदिन पैंतीस हज़ार बच्चे भिन्न भिन्न रोगों में ग्रस्त हैं जिनकी बड़ी संख्या मौत के मुंह में चली जाती है। दक्षिणी ऐशिया, बाल रक्षा में कुछ अधिक ही असफल है। इन सार्क देशों में पैदा होने वाले बच्चों में बीस प्रतिशत बच्चे ऐसे होते हैं जिनका वज़न कम होता है जो बहुत से रोगों का कारण है।

गत अप्रैल २००४ में विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर संयुक्त अन्तर राष्ट्र ने जिस विषय का चयन किया था, उस संबंध से विश्व स्वास्थ संस्था ने काम करने का जो सिद्धान्त अपनाया उसमें छः बातों को सबसे अधिक ख़तरनाक बताया –

१. शुद्ध जल का न होना

२. पानी की निकासी का अनुचित प्रबंध

३. हवा का प्रदूषण

४. माहौल में फैले हुए रोग

५. रसायनिक सामग्री और हथियार

६. समय और असमय की दुर्घटना

इन खतरनाक कारणों से बचाओ के लिए जो प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये उनका सारांश इस प्रकार है–

– शुद्ध जल प्राप्त करने के लिए शहर और दीहात में तमाम साधनों को काम में लाना।

– स्कूलों में साफ़ पानी का प्रबन्ध करना।

– पीने के पानी की रसायनिक तत्व से दूर रखा जाए।

– कुएं और टियूबवेल और उबले हुए पानी को अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए।

– पाख़ाने और पेशाब के बाद बच्चों की सफ़ाई पर विशेष ध्यान दिया जाए।

– बच्चों के लिए अलग बाथ रूम बनाये जाएं।

– गन्दगी पर पानी बहाने और कूड़ा करकट कचरेदान में डालने की आदत बनाई जाए।

– दिन भर में कई बार हाथ मुंह धोने की कोशिश की जाए।

इन प्रस्तावों में इस बात की ओर संकेत हैं कि बच्चों के लिए स्वास्थजनक वातावरण घर से शुरू किया जाये, फिर यह वातावरण घर के बाद शिक्षा संस्थानों और सामाजिक स्तरों पर फैल जाए। यदि हममें से प्रत्येक आदमी अपने कर्तव्य को महसूस करे और बच्चों के तेईं लापरवाही न दिखा कर स्वास्थ वातावरण को विश्वासनीय बनाने का प्रयत्न करे तो निःसन्देह दुनिया भर में हर साल पचास लाख से अधिक वातावरणिक रोगों से प्रभावित बच्चों की संख्या में कमी आ जाएगी, और हमारा आने वाला "कल" आज के मुकाबले में अधिक रोशन और प्रकाशमान होगा।

२० नवम्बर १९६९ को बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए स्थापित होने वाले अन्तरराष्ट्रीय संस्था "यूनीसेफ" ने बच्चों के रोगों पर नियंत्रण करने की बहुत ही सफलतापूर्वक कोशिश की है। और इस अन्तरराष्ट्रीय संस्था के ठोस कामों के कारण दुनिया भर के बच्चों के मरने की संख्या में भारी कमी आई है परन्तु "यूनीसेफ" या अन्य अन्तरराष्ट्रीय संस्था की कोशिश उसी समय सफल हो सकती है जब हमारा नैतिक सहयोग उस संस्था के साथ हो और हमारे अन्दर अपने बच्चों के स्वास्थ के लिए चिन्ता होनी चाहिए, विश्व स्वास्थ्य संस्था द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावना कार्यान्वित करने के लिए कुछ ज़िम्मेदारियां शासन की हैं जैसे साफ पानी का स्टाक और पानी की निकासी

का उचित प्रबन्ध करना इसी तरह कुछ काम "यूनिसेफ" या **W.H.O.** जैसी संस्थाओं के ज़िम्मे है जैसे घातक रोगों से बचाओ में हिफ़ाज़ती टीकों का क्या रोल होता है इससे जन साधारण को परिचित कराना, खून, विटामिन 'ए' और आयोडीन की कमी की ख़तरनाकी और ध्यान दिलाना, गर्भ अवस्था और जचकी के समय जिन एहतियातों (सावधानियों) की ज़रूरत है उनसे अवगत कराना, और स्वास्थ्य संबंधित मूल समस्याओं के हल की कोशशि करना और जन साधारण में स्वास्थ्य की रक्षा के बारे में चेतना जागृत करना आदि।

इस समय विश्व स्तर पर माहौलियाती रोगों की रोक थाम में उन्नति प्राप्त देश अधिक सफल हैं क्यों कि उनके यहां जनता में शिक्षा और चेतना है और उन्नतिशील देशों में इस प्रकार के रोगों के पनपने के अधिक अवसर इसी कारण हैं कि उन देशों की जनता में शिक्षा, चेतना, विवेक, अनुभव की कमी है, हमारे देश भारत वर्ष में माहौलियाती प्रदूषण से बचने के सम्बन्ध में साधारण जनता में काफ़ी बेतवज्जही और लापरवाही है विशेष कर ग्रामीण जन्ता में, जिसके कारण ज़रा सी गफ़लत, बच्चों के हक़ में नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़सान का सबब बन जाती है, मिसाल के तौर पर पोलियो के क़तरे बच्चों के पिलाने के लिए मीडिया द्वारा खूब चर्चा की जाती है और प्रशासन की ओर से घर घर जाकर पिलाने की व्यवस्था की जाती है। इसके बावजूद बहुत से बच्चे पोलियो के क़तरों से महरूम (वंचित) होकर मां बाप की लापरवाही के शिक़ार हो जाते हैं। कुछ शिक्षित मां बाप की ओर से भी कोताही बरती जाती है प्रायः यह संदेह और आशंका आती है कि पोलियो के क़तरों से बच्चों को बुखार आ जाता है। या जवानी में जिन्सी कमजोरी (यौन सम्बन्धी दुर्बलता) पैदा हो जाती है, जबकि यह सब सन्देह है, वास्तविकता से इसका कोई सम्बन्ध नही, ग़फ़लत और कोताही की वजह से इस तरह की आशंकाएं जन्म लेती हैं, जिनके परिणाम स्वरूप बच्चों को माअ़जूर (लाचार) ज़िन्दगी का तोहफ़ा मिल जाता है, आयोडीन की कमी से ज़हिनी अमराज़ (दिमाग़ी रोगों) की संभावना बढ़ जाती है जिनसे बचने का आसान तरीका आयोडीन मिले हुए नमक का इस्तेमाल है। लेकिन इतनी मामूली सी बात की तरफ तवज्जुह (ध्यान) न देने की वजह से हर साल लाखों बच्चे आयोडीन की कमी के शिकार होते हैं। विटामिन–ए की कमी से आंखों के रोग जन्म लेते हैं, गांव और दीहात के लोग भी जानते हैं कि सब्जियों और फलों के प्रयोग से आंख की बीनाई (रोशनी) ठीक रहती है अर्थात सब्जियों और फलों में विटामिन–ए, की मौजूदगी का इल्म सभी लोगों को है इसके बावजूद गोश्तखोरी की तरफ तवज्जुह ज़ियादा होती है बच्चों के लिए विशेष रूप से सब्जियां फलों और दूध से तैयार की हुई खाने की चीज़ों की तरफ ज़ियादह तवज्जुह होना चाहिए कि इसकी वजह से मासूम (निष्पाप) बच्चे नाबीनापन (अन्धेपन) के शिकार नहीं हो सकेंगे।

आज साइंस और टेकनालोजी के मौदान में दुनिया जिस तेज़ रफ़्तारी (तीव्र गति) से आगे बढ़ रही है माहौलियाती आलूदगी (वातावरण प्रदूषण) में उतना ही तेजी से इज़ाफ़ा हो रहा है कि जिसकी वजह से बच्चों के तईं हमरी ज़िम्मेदारियां दो गुना हो जाती हैं कि बच्चे फूल की तरह नाज़ुक होते हैं उनकी क़ूवते मुदाफ़अ़त (मुकाबिले की शक्ति) कमज़ोर होती है, और हमारी ज़रा सी लापरवाही अपने बच्चों के ताबनाक मुस्तक़बिल (उज्जवल भविष्य से हमें मायूस (निराश) कर सकती है।

राष्ट्रीय सहारा उर्दू के शुक्रिये के साथ

अनुवाद : गुफरान नदवी

तालिब को अपने रखती है,
दुन्या ज़लील व ख़्वार।
ज़र की तमअ़ से छानते
हैं खाक न्यारिये।

(पृष्ठ २७ का शेष)

उसको वापस किया।

रसूलुल्लाह स० हल्फ़ुलफ़ुज़ूल में सम्मिलित थे (शरीक थे) और आप (स०) इससे बहुत प्रसन्न थे, नुबूवत के बाद इस प्रतिज्ञा की प्रशंसा करते और फरमाते कि इस्लाम आ जाने के बाद भी अगर मुझे इस नाम पर बुलाया जाए तो मैं उसको पूरा करने के लिए तैयार हूं "उन्होंने ये प्रतिज्ञा की थी कि हक हकदार तक पहुंचाएंगे और कोई अत्याचारी कमजोरों पर गालिब ना हो सकेगा।

इस समय भी आवश्यकता है ऐसे साहसी और मानवता प्रेमी नौजवानों की जो अत्याचार के विरोध में एक पर्वत की तरह खड़े हो जाए और अत्याचारी के हाथ को मोड़ दें।

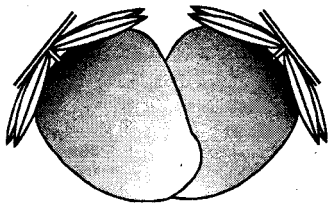

आम

इदारा

आम भारत पाकिस्तान का मशहूर फल है यह तुख़्मी और कलमी दो तरह का होता है। लखनऊ के मलीहाबाद का कलमी आम दुन्या में मशहूर है। सऊदिया के शाह फैसल ने मलीहाबाद से कलमैं मंगवा कर शाही बाग लगाया था। उन कलमों के मिजाज़ के मुताबिक मलीहाबाद से मिट्टी भी ले जाई गई थी।

कच्चे आम को जब तक उसमें गिठली न पड़े कैरी कहते हैं। कच्चे आम का मजा खट्टा होता है और पक्के आम का मजा मीठा और मजेदार कुछ आम खट्टे भी होते हैं।

पक्के हुए तुख्मी आम का रस चूसा जाता है और कलमी आम को काट कर खाया जाता है। कलमी आम तुख्मी के मुकाबले में देर में हज्म होता है। कलमी आम की बहुत सी किस्में हैं इनमें समर बिहिश्त (चौंसा) और दसेहरी सब से अच्छे समझे जाते हैं। मलीहाबाद की दसेहरी अपनी खुशबू और लज़्ज़त के लिए बहुत मशहूर है।

पक्का आम तुख्मी हो या कलमी बदन को ताकत देता और उसकी परवरिश (पोषण) करता है और क़ब्ज़ को दूर करता है।

नई तहक़ीक़ात (रिसर्च) के मुताबिक आम में विटामिन सी बहुत जियादा मिक्दार (मात्रा) में पाया जाता है। और इसमें कुछ विटामिन ए भी होता है इन विटामिन्स के सबब आम बदन की परवरिश खास तौर से बच्चों की बढ़ोतरी के लिए बहुत मुफीद (लाभ दायक) है।

आम नहार मुंह (बासी मुंह) न खाएं। खाना खाने के बाद या तीसरे पहर खाएं। आम खाने के बाद दूध पी लेने से उसके फाइदे (लाभ) बढ़ जाते हैं। आम खाने के बाद चार छे जामुनैं खा लेने से आम जल्द हज्म हो जाता है।

कच्चा आम लू से बचाता है। कच्चा आम भूभुल में पका कर उसके गूदे का शरबत बना कर पियें तो लू से बचे रहें। जिस पर लू का असर हो गया हो उसके लिये भी यह शरबत मुफीद है।

आम की गुठली का गूदा पीस छानकर तीन ग्राम पाउडर ताजे पानी के साथ खाने से दस्त रूक जाते हैं। हैज़ (माहवारी) की ज़ियादती, खूनी बवासीर, शकर के मरज के सबब पेशाब की जियादती में भी यह पाउडर फाइदा देता है। तीन तीन ग्राम ताजे पानी से सुबह शाम खिलायें।

आम के तने की ऊपरी चिप्टी अलग कर के छाल निकालें यह छाल पानी में उबाल कर ठंडा कर लें यह पानी दस्त, माहवारी में खून की जियादती, बवासीरी खून, औरतों के सफेद पानी आने में, पेचिश में इन सब हालतों में मुफीद है। एक एक तोला (दस दस ग्राम) दिन में तीन चार बार पिलायें। दस्तों में दही में पीस कर पिलाएं।

आम के दरख्त के अन्दर की छाल दो तोला (लगभग २० ग्राम) कूट कर रात को २०० ग्राम पानी में भिगो दें, सुब्ह को छान कर पियें, एक हफ्ता तक इस्तिअ़माल से सूजाक की तकलीफ दूर हो जाती है।

आम के बौर (फूल) साये में सुखा कर कूट छान लें इस पाउडर में बराबर की खान्ड (कच्ची शकर) मिलाकर सात ग्राम पाउडर दूध के साथ खाएं तो इस से मर्दों का जिर्यान और औरतों का सैलान खत्म हो जाता है।

आम की कोपलें पीस छान कर पिलाने से दस्त रूक जाते हैं। खूनी बवासीर और पेशाब में खून आने में भी मुफीद है। आम का मुरब्बा और अचार भी डाला जाता है। अचार खाने को हज्म करता है। अचार का तेल गंज में मुफीद है।

आम के बौर का एक करिश्मा

"दीहाती मुआलिज़" (हम्दर्द की किताब) में लिखा है कि जब आम का बौर शुरूअ़ में दिखे तो कुछ बौर तोड़ कर अपने पास रख लें। उस में से थोड़ा हाथ में लेकर दोनों हथेलियों से मलें और मलते रहें खत्म हो जाने पर तुरन्त दूसरा बौर लेकर मलें लगातार एक घंटे तक मलें फिर चार घंटे तक हाथ न धायें तो आप के हाथ में एक ऐसी ताकत पैदा हो जाएगी कि बिच्छू काटे की जगह पर हथेली रख दें तो जहर खत्म हो जाएगा। यह ताकत साल भर तक रहेगी। कोई साहिब तजरिबा करें और केवल बिच्छू काटे पर आजमाएं फिर सच्चा राही को लिखें। मेरा अपना तज़रिबा नहीं है।

हमारा सौर मण्डल और पृथ्वी

लतीफ अहमद एम.ए.

हमारी पृथ्वी सौर मण्डल अर्थात सूर्य के गिर्द घूमने वाले ९ मुख्य ग्रहों में से एक है। यहां के पर्वत, नदियां, जलाशय, वन, मरुस्थल, जीव जन्त और आकर्षण का केन्द्र हैं.। अतः इसके बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए मनुष्य आदिकाल से ही प्रयत्न करता रहा है और आज भी कर रहा है।

पृथ्वी लट्टू की तरह घूमता हुआ एक गोलाकार खगोलीय पिण्ड है। यह सूर्य के चारों ओर घूमता है। इसका एक परिक्रमण लगभग ३६५ १/४ दिन में पूरा होता है। इसकी सूर्य से औसत दूरी लगभग १५ करोड़ किलोमीटर है। यह दूरी हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यदि पृथ्वी सूर्य के अधिक निकट होती तो हम तक आने वाली गर्मी इतनी प्रचण्ड होती कि यहां पर जीव जन्तुओं का अस्तित्व सम्भव नहीं हो पाता, और यदि पृथ्वी सूर्य से अधिक दूरी पर होती तो अधिक ठण्डक के कारण भी यहां कोई जीवधारी न होता।

सूर्य — यह अत्यन्त गर्म प्रज्वलित गैसीय पदार्थों का एक बहुत बड़ा गोलाकार खगोलीय पिण्ड है, जिसका व्यास लगभग १४ लाख किमी. (१३,९२,५२०किमी.) है। इसका आयतन हमारी पृथ्वी की अपेक्षा लगभग १३ लाख गुना से भी अधिक है। यह एक मध्यम आयु का सितारा है जिसकी आयु लगभग ४६०० करोड़ वर्ष अनुमानित की गई है। इसकी पृथ्वी से दूसरी लगभग १५ करोड़ (१४,९५,९७,९००) किलोमीटर है। इसके प्रकाश को हम तक पहुंचने में लगभग ८ १/३ मिनट लगते हैं, जबकि प्रकाश १ सेकण्ड में लगभग ३ लाख किमी की दूरी तय करता है। यह अपनी धुरी पर २५ दिन ९ घण्टे और ७ मिनट में एक बार परिभ्रमण करता है। यह हमारी पृथ्वी को प्रकाश, गर्मी शक्ति तथा जीवन प्रदान करता है। समस्त जीवधारियों के प्राथमिक भोजन के लिए होने वाली प्रकाश संश्लेषण की क्रिया सूर्य के बिना असम्भव है।

तारे और अन्तरिक्ष :

रात को आकाश में असंख्य तारे अथवा नक्षत्र दिखाई देते हैं। ये वास्तव में बड़े बड़े सूर्य हैं। इनमें से कई तो हमारे सूर्य से भी कई गुना बड़े हैं। इनके अपने सौर मण्डल हैं। परन्तु वे सब हम से बहुत दूर हैं। दूरी का अनुमान हम इस बात से लगा सकते हैं कि इनमें से जो नक्षत्र सबसे अधिक हमारे समीप हैं उसका प्रकाश हम तक लगभग ४ वर्ष में पहुंच पाता है। (प्रकाश का वेग ३,००,००० कि.मी./सेकेण्ड)। कुछ नक्षत्रों का प्रकाश तो हमारी ध रती तक पहुंचा ही नहीं। इस अथाह दूरी के कारण ही हमें तारे इतने छोटे दिखाई देते हैं। असंख्य सौर मण्डल और अन्य पिण्ड मिलाकर ब्रह्माण्ड बनता है। तारों, ग्रहों और अन्य खगोलीय पिण्डों के बीच जो अनन्त खाली स्थान है, उसे अन्तरिक्ष कहते हैं।

ग्रह— उन गोलाकार पिण्डों को कहते हैं जो सूर्य के चारों ओर निरन्तर घूमते रहते हैं। वे सभी ग्रह सूर्य से प्रकाश तथा ताप प्राप्त करते हैं। उनमें से नौ ग्रह प्रमुख हैं, जिनमें हमारी पृथ्वी भी एक है। सूर्य से दूरी के क्रम में उन ग्रहों के नाम ये हैं :— बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण और कुबेर (प्लूटो)। बुध ा की दूरी सूर्य से लगभग ६ करोड़ किलोमीटर है। और प्लूटो की लगभग ६ अरब किलोमीटर है। बृहस्पति और प्लूटो की लगभ ६ अरब किलोमीटर है। बृहस्पति आकार में सबसे बड़ा ग्रह है और बुध सबसे छोटो ग्रह है।

उपग्रह — जिस प्रकार पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं, ठीक वैसे ही उपग्रह अपने—अपने सूर्य की परिक्रमा करते हैं। हमारी पृथ्वी का एक ही उपग्रह है जिसे हम चन्द्रमा या चांद कहते हैं। बुध और शुक्र का कोई उपग्रह नहीं। मंगल के २ उपग्रह हैं; वरुण (नेप्ट्यून) के ८, अरूण (यूरेनस) के १५, बृहस्पति के १६ और शनि के २२ उपग्रह हैं। शनि के चारों ओर घूमती हुई धूल के अनेक छल्लों से मिलकर बना एक विशाल छल्ला इस ग्रह को एक विशेष रूप प्रदान करता है, जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है।

चन्द्रमा — यह हमारी पृथ्वी का उपग्रह है। इसकी पृथ्वी से दूरी लगभग ४ लाख किलोमीटर है। यह लगभग २६ १/२ दिन में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी करता है। इस अवधि को एक "मास" कहते हैं। सभी ग्रहों और उपग्रहों की भांति चन्द्रमा भी सूर्य से ही प्रकाश पाता है। जब चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्य के बीच होता है और उसका अप्रकाशित भाग हमारी ओर होता है, तब हमें चांद दिखाई नहीं देता।

चन्द्रमा और उसकी कलाएं

पृथ्वी और चन्द्रमा दोनों सूर्य से प्रकाश प्राप्त करते हैं उनके गोल होने के कारण दोनों का आधा भाग सदा प्रकाशित रहता है और आधा भाग सदा अंधरे में। पृथ्वी के अंधेरे भाग पर चन्द्रमा के प्रकाशित भाग से जो प्रकाश की किरणों परिवर्तित होती हैं, उन्हें हम चांदनी कहते हैं।

पृथ्वी पर चन्द्रमा का सम्पूर्ण प्रकाशित भाग महीने के केवल एक बार अर्थात् पूर्णिमा को दिखाई देता है। इसी प्रकार मास में एक दिन ऐसा भी आता है जब चन्द्रमा का सम्पूर्ण अप्रकाशित भाग पृथ्वी के सामने होता है और तब चन्द्रमा दिखाई नहीं देता ; यह दिन अमावस्या कहलाता है। अमावस्या से पूर्णिमा तक चन्द्रमा का हमें दिखाई देने वाला प्रकाशित भाग प्रतिदिन बढ़ता जाता है। पूर्णिमा से अमावस्या तक यह प्रतिदिन घटता जाता है। चन्द्रमा की इन्हीं बदलती हुई आकृतियों को चन्द्रकलाएं कहते हैं। चन्द्रमा की इन्हीं बदलती हुई आकृतियों को चन्द्रकलाएं कहते हैं। बढ़ते चांद के पखवाड़े को शुक्ल पक्ष और घटते पखवाड़े को कृष्ण पक्ष कहते हैं।

चन्द्रग्रहण — जब पृथ्वी चांद और सूर्य के बीच में ठीक सीध में आ जाये तो पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती और उस पर अंधेरा छा जाता है, इसे चन्द्रग्रहण कहते हैं। चन्द्रग्रहण सदा पूर्णिमा को होता है, परन्तु हर पूर्णिमा को नहीं होता। इसका कारण यह है कि पृथ्वी तथा चन्द्रमा के कक्षतलों में लगभग ५° का परस्पर झुकाव है। चन्द्रग्रहण उसी पूर्णिमा को होता है, जब चन्द्रमा पृथ्वी के कक्षतल में होता है। ऐसा कभी—कभी ही होता है। जब चन्द्रमा का केवल कुछ भाग पृथ्वी की परछाईं में आता है तो उसे खण्ड ग्रहण कहते हैं। जब चन्द्रमा का पूरा प्रकाशित भाग पृथ्वी की परछाईं में आ जाता है तो इसे पूर्ण चन्द्रग्रहण कहते हैं।

सूर्य ग्रहण — सूर्य ग्रहण अमावस्या के दिन होता है परन्तु हर एक अमावस्या को नहीं होता। इसका कारण वही है कि पृथवी तथा चन्द्रमा के कक्षतालों में ५° का झुकाव है। सूर्य ग्रहण तभी होता है जब अमावस्या को चन्द्रमा पृथ्वी के कक्षतल में आ जाता है। ऐसा कभी—कभी ही होता है।

सूर्य ग्रहण के समय चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्य के बीच में आ जाता है। इस कारण सूर्य का प्रकाश पृथ्वी के कुछ भाग पर नहीं पहुंच पाता। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि चन्द्रमा के बीच में आ जाने के कारण चन्द्रमा की परछाई पृथ्वी पर पड़ती है और जहां—जहां परछाई पड़ती है वहां से सूर्य दिखाई नहीं देता। जब सूर्य का आंशिक भाग नही दिखाई देता तो उसे खण्ड—सूर्य ग्रहण कहते हैं। जब चन्द्रमा सूर्य को पूरा ढक लेता है तो पूर्ण—सूर्यग्रहण होता है।

सौर मण्डल अथवा सौर परिवार—

सूर्य, उसके चारों ओर घूमने वाले ६ ग्रहों और इन ग्रहों का परिक्रमण करने वाले उपग्रहों को मिलाकर सौ मण्डल अथवा सौर परिवार कहा जाता है। इनके अतिरिक्त सौर परिवार में अनेक क्षुद्र ग्रह भी हैं जो मंगल और बृहस्पति के मार्गों के बीच के भाग में घूमते हैं। वे बहुत छोटे—छोटे पिण्ड हैं। सभी ग्रह और उपग्रह अपने—अपने अक्ष (कीली) पर भी घूमते हैं, जैसे लट्टू घूमता है। इसे परिभ्रमण कहते हैं।

अक्ष और ध्रुव — पृथ्वी लट्टू की तरह घूमती है। इस परिभ्रमण में पृथ्वी के ठीक बीचों—बीच जो स्थिर सरल रेखा मानी जाये जिस पर पृथ्वी घूमती है, उसे "अक्ष" या भौगोलिक अक्ष (कीली) कहते हैं। अक्ष के उत्तरी सिरे को "उत्तरी ध्रुव" और दक्षिणी सिरे को "दक्षिणी ध्रुव" कहते हैं। भौगोलिक ध्रुव घूमती हुई पृथ्वी के धरातल पर के स्थिर बिन्दु होते हैं।

विषुवत रेखा (भूमध्य रेखा) — दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर ग्लोब के बीचों—बीच चारों ओर जो काल्पनिक रेखा खींची हुई है उसे 'विषुवत रेखा' या 'भमध्य रेखा' कहते हैं। भूमध्य रेखा ग्लोब के दो बराबर भागों में बांटती है। उत्तर का भाग 'उत्तरी गोलार्ध' और दक्षिण का भाग दक्षिणी गोलार्थ कहलाता है।

सूरज और चान्द (का काम) हिसाब के साथ है। (पवित्र कुर्आन) अगर इनका काम हिसाब से न होता तो दुन्या में उथल पथल मच जाती।

●●●

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

● **इस्लामी बैंक की स्थापना:** एक सूचना के अनुसार पाकिस्तान सेन्टरल बैंक ने एक सरकारी बैंक को देश की उत्तरी पश्चिमी प्रान्त में शरीअत के मुताबिक बिना सूदी लेन देन के लिए एक नया बैंक खोलने का आदेश दिया है। इस प्रान्त के वित्त मंत्री ने खैबर बैंक को एक माह के अन्दर इस्लामिक बैंक खोलने का हुक्म दिया है। पहले भी इस प्रकार की चेष्टा होती रही है परन्तु पास्तिान के पश्चिमी विचार धारा और राजनीतिक वर्ग ने इस को कभी भी अमल में नहीं आने दिया। देखिए इस एलान का क्या नतीजा निकलता है।

●**कोवैत में शैतानी आयात से अधिक खतरनाक पुस्तक को बेचने की कोशिश :** कोवैती समाचार पत्र "अलअंबिया" के अनुसार कोवैत में एक इराक़ी शहरी ने गुस्ताखे रसूल सलमान रुश्दी की बदनाम ज़माना पुस्तक शैतानी आयात से अधिक ख़तरनाक पुस्तक "अश्शख़्शियातुल मुहम्मदिया" बेचने की कोशिश की। किताब में मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत को नकारा गया है और हज को बुतपरस्ती के युग का एक मेला क़रार दिया गया है। इस पुस्तक में शीयों पर भी हमला किया गया है। प्रकाशक जो एक इराकी नागरिक है इस पुस्तक को कोवैत में लगी पुस्तक नुमाइश और होटल में चोरी छुपी बेचने की कोशिश की जहां वह ठहरा हुआ था। परन्तु जब इस की सूचना कुछ शहरियों और प्रशासन के जिम्मेदारों को लगी तो वह उत्तेजित हो गए और उसे भागने पर मजबूर कर दिया। कहा जाता है कि प्रकाशक इराक में एक पुस्तकालय का मालिक है और नुमाइश में नियमों के विरुद्ध आ गया था। जिसका उद्देश्य कोवैत के सम्बन्धित मंत्रालय को बदनाम करना और कोवैती मंत्री श्री अबुल हसन को फंसाना था।

●**जर्मन स्कूलों में इस्लामियात की शिक्षा का प्रारम्भ :** अरब वेबसाइट "मुहीत" की सूचना के अनुसार पिछले दिनों जर्मनी के कुछ स्कूलों ने इस्लामियात के विषय को पाठ्यक्रम में दाखिला किया है। यह जर्मनी की शिक्षा व दीक्षा मंत्रालयों की इस योजना के अन्तर्गत शुरू किया गया है जिसका उद्देश्य प्राइमरी स्कूलों में बच्चों को इस्लाम से परिचित कराना है ताकि बड़े होकर मुसलमानों के साथ सौहार्द पूर्ण व्यवहार कर सकें।

इन लोगों को आशा है कि इन बच्चों के माध्यम से सौहार्द का यह संदेश उनके अभिभावकों और बड़ों तक भी पहुंचेगा। जर्मनी के जिन प्रान्तों में यह विषय पाठ्यक्रम में दाखिल किया गया है उनमें पाइरन सक्सोनिया, जर्मनी की राजधानी बर्लिन सम्मिलित हैं। सऊदी समाचार सूत्रों के अनुसार तय पाया है कि वह पाइरन प्रान्त में स्थित नगर एयरलांजीन वह पहला शहर होगा जहां के स्कूलों में सबसे पहले इस विषय की शिक्षा को प्रारम्भ किया जाएगा।

●**सबसे छोटा जासूसी हवाइ जहाज तैयार होगा–** ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने एक बहुत छोटे जासूसी हवाई जहाज बनाने की योजना तैयार की है। ब्रिटेन के ऐरो स्पेस ग्रूप के असमत गौरसेल ने बताया कि हम शहद की मक्खी के शरीर के बराबर एक छोटे जासूसी हवाई जहाज बनाने जा रहे हैं। इसमें मक्खी की ही तरह छोटे पर लगाए जाएंगे जो कि बहुत ही तेजी से हरकत करेंगे और इसकी कार्य क्षमता बहुत प्रभावशाली होगी। यह हवाइ जहाज जासूसी करते हुए दुश्मन की गाड़ियों पर बैठ कर चित्र भेजेगा।

आ़लिम को मौलाना कहना शिर्क नहीं है।

छत्तीस गढ़ के अ़ब्दुल क़दीर ख़ां ने एक लम्बा ख़त लिखा है जिसका ख़ुलासा यह है कि किसी मख़्लूक़ को मौलाना कहना शिर्क है। इसलिए कि मौलाना क़ुर्आन मजीद में अल्लाह के लिए बोला गया है। उन्होंने ने मांग की है कि मौलाना लिखना छोड़िए और शिर्क न फैलाइये। उनकी ख़िदमत में जावबन अ़र्ज़ है :

लफ़्ज़ मौलाना का इस्तिअ़माल हम लोग पसंद नहीं करते लेकिन किसी भी आ़लिम के एह्तिराम (सम्मान) में मौलाना का लफ़्ज़ उ़र्फ़ बन चुका है। और मौलाना न लगाने पर दूसरे लोग बुरा मानते हैं। इसलिए हम लोग "मौलाना" लिखते हैं।

(शेष पृष्ठ २६ पर)